Chap-1

अध्याय-1

हास्य-व्यंग्य विषय का शास्त्रीय अध्ययन

अध्याय-1

हास्य-व्यंग्य विषय का शास्त्रीय अध्ययन

1. **हास्य के भेद**
   हास्य के प्रकार
   हास्य की परिभाषा
   भारतीय विद्वानो की दृष्टि से हास्य की परिभाषा
   हास्य का पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि से विवेचन

2. **व्यंग्य का शास्त्रीय अध्ययन**
   व्यंग्य क्या है ?
   व्यंग्य की भारतीय व्युत्पत्ति
   व्यंग्य की पाश्चात्य व्यत्पत्ति
   व्यंग्य की परिभाषा
   भारतीय आलोचकों की परिभाषायें
   पाश्चात्य विद्वानों की व्यंग्य विषयक परिभाषाये

3. **स्वरूपतः हास्य प्रभेद व्यंग्य**
   उपहास और व्यंग्य
   परिहास और व्यंग्य

4. **व्यंग्य के तत्त्व**
   व्यंग्य का उद्देश्य एवं प्रयोजन
   व्यंग्य के प्रकार
   हास्य और व्यंग्य में भेद

प्रथम अध्याय

हास्य-व्यंग्य विषय का शास्त्रीय अध्ययन

हास्य-रस का शास्त्रीय अध्ययनः-

भारतीय काव्यशास्त्र के अंतर्गत रस की कल्पना संस्कृत में हुई है। अंग्रेजी साहित्य में रस का कोई पर्यायवाची शब्द नहीं मिलता। वस्तुतः परिपुष्ट भाव का नाम ही रस है। अंग्रेजी में भाव को 'इमोशन' कहते हैं। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में ही इसका प्रथम बार नियमबद्ध उल्लेख हुआ है।

आचार्य भरत का कहना है कि 'द्रुहिण' नामक किसी आचार्य द्वारा इसका अविष्कार हुआ। वे लिखते हैं - 'हट्टौ रसाः प्रोक्ता द्रुहिणेन महात्मना।' इससे ऐसा प्रतीत होता है कि अभिनय देखने से दर्शको में जो तन्मयता आती है, रस की कल्पना उसी के आधार पर हुई प्रतित होती है।

अग्नि-पुराण के अनुसार मुख्य रसचार माने जाते हैं - श्रृंगार, रौद्र, वीर तथा वीभत्स। इन चारों के आधार से शेष रसों की उत्पत्ति होती है। श्रृंगार से हास्य, रौद्र के करुण वीर से अद्भूद और वीभत्स से भयानक का आविर्भाव हुआ। भरतमुनि ने भी पहले चार रस की उत्पत्ति मानी है - श्रृंगार, रौद्र, वीर और वीभत्स तथा उन्होंने भी श्रृंगार से हास्य की उत्पत्ति मानी है। ''श्रृंगारति हास्य'' भरतमुनि के अनुसार ''श्रृंगार रस की अनुकृति हास्य है'' अनुकृति का अर्थ है अनुकरण अथवा नकल करना। नकल हँसी की जड़ है। किसी की बातचीत, चाल-ढ़ाल, वेश-भूषा आदि की नकल जब विनोद के लिए की जाती है तब हँसी का प्रादुर्भाव होता है, यह हास्य और

व्यापक होता है, इसी कारण बाद में यह भी स माना जाने लगा। डॉक्टर राम कुमार वर्माने भरत के उक्त सूत्र में कि हास्य श्रृंगार से प्रेरणा पाता है, अपना संशोधन रखा है। हास्य केवल श्रृंगार से प्रेरणा नहीं पाता, जीवन की अनेक परिस्थितियों से बल ग्रहण करता है। 1

हास्य के भेद :-

साहित्य दर्पण में हास्य के छ भेद किये गये हैं।
ज्येष्ठानाम स्मितहसिते मध्यामा विहसितवहसितेच।
नीचानाम पहसिंत तथा ति हसिंत तदेब षड़भेदः॥
ईषद्धि कासिनयंन स्मितं स्यात्स्पन्दिताधरम।
किंचित लक्ष्यद्विज तत्र हसित कथित बुधै॥
मधुरस्वर विहसितं संस शिरः कम्पमवहसितम्॥
अवहसिंत सास्त्राक्ष विक्षिप्ताडुः च भवत्यतिहसितम्॥

अर्थात (1) स्मित (2) हसित (3) विहसित (4) उपहसित (5) अपहसित (6) अतिहसित।

इनमें से स्मित और हसित श्रेष्ठ लोगों के योग्य है विहसित और उपहसित दोनों प्रखार मध्यम श्रेणी के माने गये हैं, और अपहिसत तथा अतिहसित जो हास की गणना अधम कोटि में की गई है।

(1) जिस दशा में कवोलो परतनिक सिकुडन पड़ती है, आँखे कुछ विकसित होती है। नीचे का होंठ कुछ हिलने का फड़कने लगता है, दाँत दिखलाई नहीं पड़ते, दृष्टि कुछ कटाक्षपूर्ण हो जाती है और इन सब कारणों से चेहरे पर एक प्रकार का माधुर्य आता है तो उसे स्मित हास्य कहते हैं।

(2) जिस हास में मुंह, गाल और आँखे फूली हुई जान पड़ती है उसे हसित कहते हैं।

(3) विहसित में हँसने की क्रिया शब्द-युक्त होती है और लोग उसे सुन लेते है। और इसमें आँख कुछ सिकुड जाती है।

(4) उपहसित में नथने फूल जाते हैं, सिर और कन्धे सिकुड़ जाते हैं और दृष्टि कुछ वक्र हो जाती है।

(5) जिस हास्य के कारण आँखो में जल आ जाय, सिर तथा कंन्धे स्पष्ट रूप से हिलने लगें और मनुष्य अपना पेट पकड़ ले, उसे अपहसित कहते हैं। 2

(6) अतिहसित में हास्य के सब लक्षण और परिणाम बहुत ही स्पष्ट होते है और मनुष्य को हँसते-हँसते पेट पकड़ना पड़ता है। रामचरन तर्कवागीश ने अपनी टीका में इन भेदों को हास्यरस के स्थायी भाव हास का भेद माना है। 'हास्य रसस्थायिभास्य हासस्य भेदानाह-ज्येष्ठ नामिति जो कि सर्वथा असंगत है। स्थायीभाव का निवास अतः करण या आत्मा में है, शरीर में नहीं। स्मित आदि भेद उपरोक्त लक्षणों से ही स्पष्ट है कि वे शरीर में रहते है। अतः ये हसन क्रिया के ही भेद हैं, हास (श्थायीभाव) के नहीं।

पण्डितराज जगन्नाथ ने 'रस गंगाधर' में हास्य के भेद अन्य प्रकार के माने है-

आत्मस्यः परसंस्थरश्चेत्यस्य भेदद्वंय मंत।
आत्मस्थो दृष्टिरूपन्नो विभाविक्षणमात्रतः ।।
हसन्तम पर दृष्ट्वा विभावश्चोपजायते।
योऽसौ, हास्य रसस्तजैः परस्य परिकीतितः ।।
उत्तमानां मध्यमानां नीचा नानायतौ भवेत।
व्यवस्थः कथितस्तस्य षड्भेदाः सन्ति चापरे ।।

हास्य रस दो प्रकार का होत है, एक आत्मस्थ दूसरा परस्थ. आत्मस्थ उसे कहते हैं जो देखनेवाले को हास्य के विषय को देखने मात्र से उत्पन्न हो जाता है।3 और जो हास्यरस दूसरे के कारण ही होता है उसे रसज्ञ पुरुष परस्थ कहते है। यह उत्तम मध्यम और अधम तीनो प्रकार के व्यक्तियों में उत्पन्न होता है। अतः इसकी तीन अवस्थाएँ कहलाती है एवं उसके और छः भेद है उत्तम में हसित और स्मित, मध्यम में विहसित और उपहसित तथा नीच में अपहसित और अतिहसित होते है।

आचार्य भरत ने हास्य के दो विभाग किये हैं- आतम्स्थ और परस्थ। जब पात्र स्वयं हँसता है तो आत्मस्थ है, जब दूसरे को हँसाता है तो परस्थ है। पंडितराज जगन्नाथ ने हास्य के विभाग को देखने से जो हास्य उत्पन्न होता है उसे आत्मस्थ माना है और किसी अन्य को हँसता हुआ देखकर जो हास्य उत्पन्न होता है उसे परस्थ माना है। 4

डॉ. रामकुमार वर्मा ने दोनों प्रकार के भेदों का समिश्रण करते हुए लिखा है- 'वस्तुतः अपने प्रभाव की दृष्टि से हास्य तीन प्रकार का माना गया, उत्तम, मध्यम और अधम। इन तीनों प्रकारों में प्रत्येक के दो भेद है। उत्तम के भेद है स्मित और हसित,

मध्यम के भेद है विहसित और उपहसित तथा अधम के भेद है अपहसित और अतिहसित। ये प्रत्येक भेद आत्मस्थ और परस्थ हो सकते हैं। इस प्रकार निम्नलिखित प्रकार से हँसने की क्रिया बारह तरह से हो सकती है।'

हँसने की क्रिया :-

उत्तम	स्मित	आत्मस्थ -1
	हसित	परस्थ -2
		आत्मस्थ-3
		परस्थ-4
मध्यम	विहसित	आत्मस्थ-1
	उपहसित	परस्थ-2
		आत्मस्थ-3
		परस्थ-4
अधम	अपहसित	आत्मस्थ-1
	अतिहसित	परस्थ-2
		आत्मस्थ-3
		परस्थ-4 5.

हास्य के भेद :-

डॉ. स्मिता चिपलूणकर ने अपनी पुस्तक में हास्य के भेदों का स्पष्टीकरण किया है। हास्य के भेद इस प्रकार हैं इस विषय में डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्रने अपने ''हास्य का विवेचन'' लेख में इस तरह अपने विचार रखे हैं- ''भारत के साहित्य शास्त्रियों ने हास्यरस के वस्तुपक्ष (विषयपक्ष) पर अधिक ध्यान दिया और विलायत के साहित्य शास्त्रियों ने उसके व्यंजना पक्ष पर'' 6

डॉ. बलदेव प्रसाद मिश्र हास्य के भेदों पर प्रकाश डालते हुये कहते हैं - 'हास्य के व्यंजना पक्ष पर जोर देनेवाले विलायत के साहित्यशास्त्रीजी उसके पाँच प्रमुख भेद मानते हैं। जिनके नाम है ह्यूमर (शुद्ध हास्य), विट् (वाग्वैदग्ध्य), सेटायर (व्यंग्य), आइरनी (वक्रोक्ति) और फार्स (प्रहसन)' ।7

हास्य के प्रकार :-

हास्य के प्रकारों के उदाहरण निम्नलिखित हैं :

(1) स्मित :-

''विवशन ब्रज बनितान के, सखि मोहन मृदुकाय।
चरि चोरि सुकदम्ब पै, कछुक रहे मुसिकाय॥''

- पधाकरः जगद्धिनोद

(2) हसित :-

जाने को पान खवावन क्यों हूँ गई लगि, आँगुली ओठ नवीने।
तै चितयों तबही तिहिं भाँति जु लाल के लोचन लीलि से लीने।
बात कही हर ये हँसि कै सुनि मैं समुझी वे महारस भीने।
जानति हैं पिय के जिय के अभिलाष सवै परिपूरन कीने।

-केशव रसिक प्रिया

(3) विहसित :-

हँसने लगे तब हरि अहा, पूर्वेन्दु-सा मुख खिल गया,
हँसनी उसी मे भीम अर्जुन, सात्यकी का मिल गया।
थे मोद और विनोद के सब, सरल झोकें झेलते,
भगवान भक्तों से न जाने, खेल क्या क्या खेलते।

- मैथलीशरण गुप्त जयड्थवध

(4) उपहसित :-

ज्यों-ज्यों पट झटकति हँसति, हटति नचावति नैन,
त्यौं-त्यौं परम उदारहू, फगुआ देत बनैन।

- बिहारी

(5) अपहसित :-

चन्द्रकला चुनि चनरी चारु दई पहिराय सुनाय सुहोरी,
वेदी विशाखा रची पधाकर अंजन आँजि समाजि केरोरी।
लागी जबे ललिता पहिरावन कान्ह कौ कंचुकी केसरी बोरी,
हेरि हरे मुसकाइ रही अँचरा मुख दे तृषमान किशोरी।

- पधाकरः जगद्धिनोद

(6) अतिहसित :-

सुनकर निज सुत के वचन विलक्षण ऐसे।
कर अट्टहास धन घट्ट नाद हो जैसे।

बोला ओ उद्धत असुर राज उत्पाती।
उन्मत्त सुरापी सर्वलोक संधाती॥ 8

- मैथलीकरण गुपप्त, प्रहलाद.

हास्य की परिभाषा :-

मनुष्य हास्य प्रेमी होता है। मनोरंजन के द्वारा वह इसे पा लेता है। ''हास्य'' में मनुष्य आनन्द की प्राप्ति कर लेता है। इस तरह ''हास्य'' आनन्द, मनोरंजन, तथा विनोदी मन का सहज़ चिह्न है। क्रोध, लोभ, प्रेम, करुणा आदि सहज मानवीय गुणो की तरह ''हास्य'' भी एक है।

सादिम मनुष्य भाषा से पूर्व ही इस सहज प्रवृत्ति से युक्त था। इस तरह सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक मनुष्य की हास्य प्रवृत्ति कायम रही है।डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी के अनुसार ''वास्तविकता तो यह है कि जीवन के आस्वाद के लिये हास्य अत्यन्त आवश्यक है। इसी के द्वारा मनुष्य के हृदय में सरलता, सहानुभूति और सरसता की धारा प्रवाहीत होती है। जीवन की जटिलताओं में उलझे मानव मस्तिष्क को हास्य ही शांति और शीतलता प्रदान करता है।'' 9

हास्य आनन्द सूचक होता है तथा आनन्द की प्राप्ति के विविध कारण हो सकते है जैसे -छोटे बच्चे को उसके मनपसन्द खिलौने मिलने पर आनन्द होता है। माँ-बाप को लाटरी में बड़ी राशि मिलजाने से या जिसके प्रति ईर्ष्या हो उसकी हानि होते देखकर भी आनन्द का भाव पैदा होता है। इसी संदर्भ में हरिशंकर परसाई कहते हैं :

''लोग किसी भी बात पर हँसते है हल्की मामूली विसंगति पर भी हँस देते हैं। आदमी अगर घोड़े सरीखा हिनहिनाये तो उस पर हँस देते है।''

हास्य की परिभाषा :- हास्य जितना सहज भाव है उतना ही उसे परिभाषित करना कठिन है। इसी करना कठिन है। इसी कारण ''हिन्दी साहित्य में ''हास्य रस''शोध प्रबन्ध के लेखक डॉ. बरसाने लाला चतुर्वेदी ने भी हास्य की कोई ठोस परिभाषा नहीं दी है। 10

भारतीय विद्वानों की दृष्टि से हास्य की परिभाषा :-

1. डॉ. सावित्री सिन्हा ने हास्य की परिभाषा इस प्रकार दी है- 'किसी घटना क्रिया परिस्थिति लेख या विचारों का अभिव्यक्ति में निहित तत्त्व जो उनकी असम्बद्धता बेढंगेपन आदि के कारण मनुष्य के मन में एक विशेष प्रकार का आनन्द या मजा उत्पन्न

करता है- वह हास्य या ह्यूमर है।''

2. हरिशंकर परसाई हास्य की गहराई तक जाने का प्रयास करते हुए कहते हैं : आदमी हंसता क्यों है। परम्परा से हर समाज की कुछ संगतियाँ होती है। सामंजस्य होते है, अनुपात होते है। ये व्यक्ति और समाज दोनों के होते है। जब यह संगति गड़बड़ होती है तब चेतना में चमक पैदा होती है। इस चमक से हँसी भी आ सकती है और चेतना में हल चल भी पैदा हो सकती है।

3. डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी की राय में : 'हास्य विनोदिनी मन की अभिव्यक्ति मुद्रा है। जिसमें सुखप्रद कोमल भाव अन्तर्निहित रहते हैं जिनके माध्यम से चित्त की सेचित गम्भीरता में आकस्मित विस्फोट-सा उठकर चित्त को कुछ क्षणों के लिए सात्विक आनन्द से भर देता है।'

इस तरह पाश्चात्य तथा हिन्दी के विविध विद्वानों के ''हास्य'' के विषय में विचारों को देखते हुए हम निश्चित रूप से कह सकते हैं कि हास्य को परिभाषा के सूत्र में बाँधना कठिन है। वह सोद्देश्य या निरुद्देश्य भी हो सकता है। हँसी उड़ाकर किसी को अपमानित भी किया जा सकता है। पर उत्तम कोटि के हास्य में बौद्धिकता तथा समझदारी दोनों की अपेक्षा होती है। वह हास्य मनुष्यता वाद के भीतर सामने वाला हो।11

(4) डॉ. नगेन्द्र ने हास्य के मूल में 'विसंगति को आवश्यक मानते हुए कहा है कि ''हास्य की मूलात्मा असंगति है।' वे हास्य को कटुता रहति मानते हैं''- हास्य स्वस्थ मन का सहज उच्छलन होता है - उद्देश्य कटुता आदि से पूर्णतः मुक्त।

(5) डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी ने आचार्य शुक्लजी के मत से अपनी असहमति प्रकट करते हुए कहा है कि - स्मित हास्य वास्तव में करुणासिक्त हास है, मुक्त हास है तथा सजल है इससे स्पष्ट है कि उन पर पाश्चात्य विचारकों का प्रभाव है।

(6) डॉ. गुलाबराय ने विकृति को हास्योत्वति के लिए आवश्यक तत्त्व माना है- ''जब विकृति भयानक स्थिति में रहती है और अनिष्ट की सीमा तक नहीं पहुँचती तब आश्रय के एक प्रकार का सुख होता है, और वह हास्य में परिणत हो जाता है।''12

(7) काका हाथरसी :- समाज-चेतना से परिपूर्ण और किसी निश्चित आदर्श का आकांक्षी साहित्यकार इन विसंगतियों को अनदेखा नहीं कर सकता। वह सदैव ऐसे अवसर की तलाश में रहता है कि कब इन परिस्थितियों पर तीक्ष्ण प्रहार कर सके।

व्यंग्य के मूलमें सामाजिक हित कामना मुख्य है, इसलिए व्यंग्यकार की दृष्टि समग्रता मानवीय कल्याण से ओतप्रोत रहती है जीवन के कटु सत्य एवं यथार्थ को अभिव्यक्त करने के लिए व्यंग्य सशक्त एवं सफल माध्यम है। व्यंग्य में प्रहार-क्षमता होती है। उसके द्वारा यथार्थ प्रकट होता है। ताकि समाज का एक-एक व्यक्ति उस पर विचार करने के लिए विवश हो सके।13

(8) डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी का यह कथन इस बात की पुष्टि करता है। सच्चा व्यंग्यकार समाज की कुरीतियों को सही रूप में देखता है और अपने व्यंग्यबाण से उसे भेदता रहता है, उसका उद्देश्य समाज का परिशोदन होता है।14

हास्य का पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि से विवेचन

हास्य परिभाषा :-

1 स्टीफन लीलांक के विचार में :-

''हास्य को जीवन की असंगतियों पर किये गए विचारों एवं उनकी कलात्मक अभिव्ज्जना के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।''

2. मेरिडिथ के अनुसार :-

''महान हास्यकार की कौशल पूर्ण कृति में उसके हास्य के साथ-साथ व्यापक करुणा का समावेश भी होता है।''15

''प्रसिद्ध कलाकार होगार्थ ने किसी प्रहसन अभिनय देखते हुए कुछ पाश्चात्य हास्यरसाचार्यों का एक चित्र अंकित किया है जिसमें उन्होंने बड़े कौशल के साथ उनकी भाव-भंगी का सजीव चित्रण करते हुए वहाँ के हास्य-साहित्य की अपने ढंग से विशद आलोचना की है।'' एक ओर आरिस्टोफेनीज की उनमुक्त हँसी है, दूसरी ओर जुवेरल का उद्दीप्त कठोर हास्य, इधर सर्वेन्टीज यथेष्ट संयम के साथ बड़े आदमियों की भाँति हँस रहे हैं उधर मिल्टन की आत्मा एलीजा की भाँति आंग्लस्वातन्त्र्य के विरोधियों पर अपने भयंकर और धृणापूर्ण अट्टहास के द्वारा प्रहार कर रही है। इसी प्रकार उन्होंने लेखको का भी दिग्दर्शन कराया है। पश्चिमी साहित्य में सदैव से हास्य का एक प्रमुख स्थान रहा है। उनका घात-प्रतिघात मय भौतिक जीवन रोना और हँसना ही अधिक जानता है।

इसीलिए रस का विवरण से करुण और हास्य पर लिखकर ही प्रायः समाप्त कर दिया करते है।

विदेशी विद्वानों ने हास्य के पाँच प्रभेद किये हैं -

(1) स्मित हास्य (Humour)

(2) वाक्छल (Wit)

(3) व्यंग्य (Satire)

(4) वक्रोक्ति (Irony)

(5) प्रहसन (Farce) 16

व्यंग्य का शास्त्रीय अध्ययन :-

आप हर कही पुराने के स्थान पर नये की स्थापना के प्रयास हो रहे है जीवन से सम्बद्ध पुरानी मान्ताएँ, परम्पराएँ मूल्य तथा पुरानी रीतियाँ सब कुछ अपने स्थान से दूर जा रहे है। जीवन को सुव्यवस्थित बनाने की लिये जो भी प्रयास हो रहे हैं वहाँ विसंगतियाँ उभरती हुई दिखाई देतीहै। आज मनुष्य अव्यधिक अशांत है। इसलिए उसे केवल सुन्दर कल्पनाओं के सुखद साम्राज्य में ले जानेवाला स्वप्रदर्शी साहित्य पसन्द नहीं। जिस साहित्य में वह अपना तथा अपने आसपास का सच्चा रूप देख सके, उसके अपने दोष भी उसे दिखाई दे तथा उन्हें हटाने के लिये वह सोच सके ऐसा साहित्य जनप्रिय हो रहा है। इस साहित्य को व्यंग्य साहित्य कहते हैं। व्यंग्य का जीवन से घनिष्ट सम्बन्ध होता है।

व्यंग्य क्या है ?

व्यक्ति का निजी जीवन तथा उसकी सामाजिक परिस्थितियाँ विभिन्न अन्तविरोधों को अपने में लिये हुए हैं। जिनसे उसे सुन्दर अकलुषित बनने में बाधाएँ आती है। इन बांधाओं पर तिखा प्रहार होता हैं। व्यंग्य के माध्यम से इस तरह व्यक्ति तथा समाज के हित की भावना से की गई गहरी चोट ही व्यंग्य होता है। अनादर, उपेक्षा, बेईमानी, असत्य भाषण आदि के अनुभव से जीवन में असन्तोष तथा दुःख व्याप्त होता है। इसका परिणाम क्रोध होता है। जो हम अपनी अभिव्यक्ति द्वारा प्रकट करते हैं। ऐसी स्थितिमें ही व्यंग्य का प्रादुर्भाव होता है।17

व्यंग्य की भारतीय व्युत्पत्ति :-

व्यंग्य संस्कृत भाषा का व्यंग्यः व्युत्पत्तिपरक अर्थ शब्द है। इसकी व्युत्पत्ति इस प्रकार मानी गई है- 'वि अञ+व्यत् से व्यंङग्य शब्द निष्पन्न होताहै। इसमें 'वि' उपसर्ग 'अञ धातु और 'ण्यत' प्रत्यय है। पाणिनी सूत्र 'ऋहलोण्यति्' (3 / 1 / 127) के अनुसार यत् प्रत्यय होता है।

''इलन्त्यर्म्'' (1।3।3)- इस सूत्र से तंकार की इत् संज्ञा होती है। ''चुटू''

(1 ।3।7)- इस सूत्र से प्रत्यय के आदि में रहनेवाले च वर्ग और ट वर्ग की इत् संज्ञा होती है ''तस्यूलोपः''-उस इत् संज्ञक वर्ण का लोप होता है। इस नियम से ''ण'' और ''त'' का लोप हुआ। अतः वि + अञ+ यत् को वि + अज्ञु + य रूप बना।

''चजो: कुधिण्ण्यतोः'' (7। 3। 52)- इस सूत्र से ''ज'' के स्थान पर ण्यत् प्रत्ययं आगे आने से ''ग'' हो गया। अतः वि+अज्ञ+ य से वि + अज्ग् + य बना। 'अनुस्वारस्ययि परसवर्णः' (8।4।58)- इस सूत्र से 'ज' के स्थान में परसवर्ण ''ङ'' हो गया तब वि+ अङ्ङय हुआ। 'इकोयणाचि' (6।1।57)- इस सूत्र से इ के स्थान पर ''य'' हो गया तब ''व्यङ्ग्य'' रूप वना। पुनश्रः वि+ अञ्ज+ ण्यत् वि+ अञ+यवि + अङ्ङय व्यङ्ग्य''। 18

''व्यंग्य'' शब्द भारतीय साहित्य में नया नहीं है। हिन्दी साहित्य कोश अनुसार 'वि' तथा 'अंग' के योग से 'व्यंग्य' तथा 'व्यंग्य' से व्यंग्य शब्द का निर्माण हुआ है।

छविनाथ मिश्र 'व्यग्य' शब्द की व्युत्पन्ति वि+अज+ण्यत् से बताते हुए अपने विचार इस तरह प्रकट करते हैं।

''व्यंग्य विशेषण है और इसे उपलक्षिण अर्थ व्यंग्योक्ति, परोक्ष संकेत या सजेष्टिव मीनिंग भी कहते हैं।''

इस तरह ''अञ्ज'' धातु में ''वि'' उपसर्ग तथा ''ण्यत्'' प्रत्यय जोड़ने में 'व्यंग्य शब्द बना है।' 19

''व्यंग्य'' शब्द की व्युत्पत्ति ''वि+अंग'' से मानी गई है। व्यक्ति, समाज या वस्तु का कोई भी अंग जब अपने उपयुक्त स्थान पर नहीं होता तब वह व्यंग्य का आलंबन बन जाता है। ''सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षिक प्रभृत क्षेत्रों में व्याप्त विसंवादिता, विषमता, विद्रूपता एवं विकलांगता की पंकिल भूमि में व्यंग्य के कमल खिलते हैं। 20

प्राचीन संस्कृत साहित्य में व्यंग्य का जो प्रयोग हुआ है। वह आधुनिक व्यंग्य के अर्थ में नहीं है भारतीय काव्यशास्त्र में व्यंग्य को ध्वनि के अंतर्गत मानकर व्यंग्यार्थ के रूप में स्वीकारा गया है।

कवि विश्वनाथ ने 'साहित्य दर्पण' में तीन की शब्द शक्तियाँ बताई है (1) अमधा (2) लक्षणा (3) व्यंजना।

इसके अर्थ इस प्रकार होते हैं।

(1) वाच्यार्थ

(2) लक्ष्यार्थ

(3) व्यंग्यार्थ

वाच्यार्थ अमिधा शक्ति से, लक्ष्यार्थ लक्षणा शक्ति से तथा व्यग्यार्थ व्यंजना शक्ति से प्राप्त होता है।

''विरतास्वभिधाधासु यया‌ऽर्थी बोध्यते परः।

सा वृतिव्यंञ्जना नाम शब्दस्यार्थादिकस्य च॥'' 21

अभिधा और लक्षणा अपने अर्थ का बोध कराकर विरत हो जाती हैं, तब जिस शब्द शक्ति के द्वारा अर्थ (व्यंग्यार्थ) ज्ञात होता है उसे व्यंजना शब्दशक्ति कहतेहैं। अतः अभिदा आदि शक्ति के शांत हो जाने पर भी व्यंजना शक्ति शब्द और अर्थ को व्यंजित करतीहै। यह अर्थ वाच्य और लक्ष्य भिन्न विलक्षण होता है। 22

हिन्दी साहित्य कोश में व्यंग्य की व्युत्पत्ति इस प्रकार मानी गई है। ''वि+अंग=व्यंग्य''

भारतीय काव्यशास्त्र में व्यंग्य को ध्वनि के अन्तर्गत रखा जाता है। शब्द-शक्तियाँ की व्यंजना शक्ति के द्वारा व्यंग्यार्थ की प्रतीति होती है। वैयाकरण के स्फोट - विवेचन में ध्वनन अथवा व्यंग्य का संकेत मिलता है। ''ध्वनि का अभिप्राय है, जहाँ अर्थ स्वयं को तथा अपने वाच्यार्थ को गौण कर प्रतिमान अर्थ को व्यक्त करते हैं, उस काव्य -विशेष को ध्वनि कहते हैं। साथ ही ध्वनि का प्रयोग केवल काव्य के लिए नहीं होता बल्कि शब्द, अर्थ, और शब्द व्यापार तथा अर्थ- व्यापार के लिए होता है।'' 23

व्यंग्य शब्द 'वि' उपसर्ग एवं 'व्यतं' प्रत्यय को 'अञ' धातु लगाने से बना है इसका व्युत्पत्तिपरक अर्थ है-

(1) विविक्षा द्वारा निर्देश

(2) गूढ़ या अप्रत्यक्ष इंगित के द्वारा निर्देश

(3) संकेलित अर्थ

(4) व्यंजनाशक्ति द्वारा निर्देशित अर्थ

आज व्यंग्य का मूल धर्म प्रहार हो गया है जो सुधार की भावना लिये हुए होताहै। इस प्रखार आज व्यंग्य का अर्थ परिवर्तित हो गया है। हिन्दी साहित्य कोश में व्यंग्य की व्युत्पत्ति इस प्रकार दी गयी है- व्यंग्य = वि +अंग

आधुनिक हिन्दी व्यंग्य अंग्रेजी के Satire विकल्प के प्रचलित है। शब्द का

मूल रोमन Satarage शब्द में है जो लैटिन में satura बुना।

Sature का मुख्य अर्थ है सर्वसाधारण की पसन्द को लिए हुए विविधता, यथार्थता कुछ उज्जड़ता लिये हुए, ग्रामीण सहृदयता से परिपूर्ण. आज के व्यंग्य में, ये गुण दिखायी देते है। 24

व्यंग्य की पाश्चात्य व्युत्पत्ति :-

व्यंग्य साहित्य की आधुनिक विधा है। भारतीय काव्यशास्त्र एवं भारतीय साहित्य में इसके शास्त्रीय रूपकी चर्चा नहीं की गई है। भारतीय या संस्कृत भाषा के साहित्य में व्यंग्य के स्वतंत्र स्वरूप का चिन्तन नहीं किया। पश्चिम के विद्वानों ने ही इसके स्वरूप पर स्वतंत्र रूप से विचार किया है। इसका जन्म कैसे हुआ, इस संदर्भ में इस प्रकार का अभिमत है।

'(व्यंग्य) सटायर का जन्म दृश्य काव्य से हुआ। रोमन्स तथा यूनानी दोनों ही अपने को इसका जन्मदाता मानते हैं। जूलियस 'स्केलिगर' तथा ''हैसियस'' जो यूनानी विद्वान हैं उकना कहना हैं कि रोमन्स ने इसे यूनान ने उनसे इसे प्राप्त किया है। ''सर्टरस'' एक विचित्र प्रकार का जन्तु होता है जिसके आधार पर इसका नामकरण हुआ है। 25

व्यंग्य का मूल लेटिन के 'Satira' शब्द से खोजा गया। बाद में 'Satira' के 'Satura' (सटूरा) हो गया। ग्रीस में फलों की प्रथम फसल की कटाई की खुशी में नकल या स्वांग के रूप में जो ग्रामीणोत्सव होता था उसके लिए 'सटायर' शब्द का प्रयोग हुआ है। मूल ग्रीक शब्द 'Satyr' है, जो कुछ समय तक 'Satyros' और 'Satura' के बीच भ्रम पैदा करता रहा। किन्तु बाद में 'Satyre' विकसित होकर अंग्रेजी में 'satire' के रूप में प्रचलित हो गया।

पाश्चात्य विद्वान पाट्स के अनुसार -''सेटायर'' शब्द लाटिन शब्द ''Satyra'' (जिसका अर्थ ''गडबडझाला'' है) ''सेतुरा'' के कम से कम दो रूप विकसित हुए थे, जिसका एक रूप बाद में भी प्रचलित रहा औरयह रूप पद्य-निबंध के समान था। पुरातनकाल में ''सेतुरा'' शब्द ''परनिंदा'' के अर्थ में प्रयुक्त होता था, और इस ऐतिहासिक अर्थ की छाया वर्तमान ''सेटायर'' शब्द पर भी पड़ी है, अब ''सेटायर'' में केवल परनिदा नहीं होती, कुछ बातों में परिवर्तन होताहै, आलम्बन की खिचाई होती है अथवा आलम्बन की तुलना चिढ़ाने योग्य, बदनाम या धृणास्पद वस्तु

से की जाती है या बात को उलट दिया जाता है या तो उसे बातों में ही उडा दिया जाता है ।'' 26

व्युत्पत्तिपरक शब्द के रूप में ''Satire'' (सटायर) पाश्चात्य साहित्य में विवादास्पद हुआ है। पाश्चात्य साहित्यकारों ने ''सटायर'' के विभिन्न अर्थ बताये हैं। किन्तु आज अंग्रेजी का ''Satire'' हिन्दी में ''व्यंग्य'' के रूप में प्रचलित हो पाया है।

व्यंग्य की परिभाषा :-

विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों ने व्यंग्य की परिभाषा अपने-अपने ढ़ंग से की है। कई भारतीय विद्वानों ने व्यंग्य को हास्य के ही एक प्रभेद के रूप में स्वीकार किया है। 'परन्तु पाश्चात्य आलोचको की परिभाषा में इससे भिन्नता है। हमारे अभीष्ट अर्थ में व्यंग्य भात्र हास्य की सृष्टि नहीं करता। वह करुणा और अमर्ष जैसे भावों का संचार भी करता है। ऐसी स्थिति में व्यंग्य को हास्य का प्रभेद भर मानना उसके अर्थ और परिभाषा को अत्याधिक सीमित तथा संकुचित कर देना ही होगा। दैनन्दिन बढ़ती जटिल जीवन परिस्थितियों में व्यंग्य का उत्तरदायित्व इतना बढ़ गया है कि उसके लिए मात्र हास्य का प्रभेद हो सकना संभव ही नहीं रहा है। एक तथ्य और, इधर व्यंग्य की परिभाषा भारतीय विद्वानों ने भी पाश्चात्य विद्वानों के मतों से कहीं न कहीं प्रभावित होकर ही की है। यथा व्यंग्य को अंग्रेजी के ''सेटायर'' शब्द का पर्याय मानकर ही परिभाषा की गई है। पाश्चात्य विद्वानो की परिभाषा में भी देखे गए है। ऐसी स्थिति में भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों की परिभाषाओं के मंतव्य को पूर्णत। अलग-अलग कर पाना निश्चत ही टेढ़ी खीर है, परन्तु फिर भी भारतीय विद्वानों एवं पाश्चात्य आलोचको द्वारा प्रस्तुत परिभाषाओं को अलग-अलग प्रस्तुत किया जा रहा है। 27

भारतीय आलोचकों की परिभाषाये :-

डॉ. रामकुमार वर्मा : ''आक्रमण करने की दृष्टि से वस्तु स्थिति को विकृत कर उससे हास्य उत्पन्न करना'' ही व्यग्य है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी :- ''व्यंग्य वह है, जहाँ कहने वाला अधरोष्ठ में हँस रहा हो और सुनने वाला तिलमिला उठा हो और फिर भी कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासास्पद बना लेना हो जाता हो।''

श्री बेढ़व बनारसी :- ''जब किसी व्यक्ति या समाज की बुराई या न्यूनता को सीधे शब्दों में न कहकर उलटे या टेढ़े शब्दों में व्यक्त किया जाता है, तब व्यंग्य की

सृष्टि होती है। व्यंग्य एक प्रकार की आलोचना है किन्तु जब व्यंग्य में क्रोध आ जाता है। तब हास्य की मात्रा कम हो जाती है।''

श्री हरिशंकर परसाई :- ''व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है। जीवन की आलोचना करता है।''

विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखण्डोका पर्दाफाश करता है। यह नारा नहीं है। मैं यह कह रहा हूँ कि जीवन के प्रति व्यंग्यकार की उतनी ही निष्ठा होती है जितनी गंभीर रचनाकार की, बल्कि, ज्यादा ही। वह जीवन के प्रति दायित्व का अनुभव करता है। जिन्दगी बहुत जटिल चीज है। इसमें खलिस हँसना या खालिस होना जैसी चीज नहीं होती। बहुत -सी हास्य रचनाओं में करुणा की धारा है। अच्छा व्यंग्य सहानुभुति का सबसे उत्कृष्ठ रूप होता है।

श्री मधुकर गंगाधर :-''व्यंग्य-मतलब ऐसी अर्थ-व्यंजना, जिसमें सत्य की आत्मा है, निर्भीकता की काया है, हास्य का झीना वस्त्र है और असत्य पर प्रहार करने की तत्परता है, वाक् वैदग्ध्य और विलक्षणता दो नासा-पुट है। युदोद्धत, प्रहारधर्मी व्यंग्य धीरोदात हाथ में जयी अस्त्र होता हैं सीकिया प्रयोगी इसे फेंककर अपना ही दाँत गँवाता है।''

श्री रघुवीर सहाय :- ''जब घने कष्ट में मन गंभीर हो उटे तब व्यथा में जो व्यंग्य है, वह भी वहाँ हो नहीं तो व्यथा ही वहाँ कैसे रहेगी।''

श्री गुलाम अहमद फ़ुरकत :- ''व्यंग्य का वास्तविक उद्देश्य समाज या सोसायटी की बुराइयों, कमजोरियों और त्रुटियों को हँसी उड़ाकर पेश करना है, मगर इसमें 'तहजीव का दामन मजबूती से पकड़े रहने की जरुरत है। वरना व्यंग्यकार मँडती की सीमाओं में प्रवेश कर जाएगा।'' 28

शरद जोशी के मातानुसार - ''व्यंग्य की पहचान है कि ऐसा साहित्य जो कष्ट सहती सामान्य जिन्दगी के करीब है या उससे जुड़ा है। यदि ऐसा न हो तो कहीं गड़बड़ है।

रवीन्द्रनाथ त्यागी के अनुसार -''समाज की कुरीर्तियों का भंड़ाफोड करने का कार्य प्रमुखतः व्यंग्य द्वारा ही हो सकता है। यदि उसमें हास्य भी समाविष्ट हो जाये तो रंग और भी तेज हो जाएगा। 29

डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी :- व्यंग्य एक विशिष्ट समाजधर्मी प्रेक्षणाविधि अथवा एक विशिष्ट मानसिक भंगिमा है। जिसका उद्‌भव अन्तविरोधों के कारण होता

है, और जिसमें व्यक्ति अथवा व्यवस्था-विशेष के दौर्बल्य की अपेक्षात्मक अभिव्यक्ति द्वारा परिवर्तन का अभीष्ट पूर्ण होता है।

डॉ. श्यामसुन्दर घोष :- ''व्यंग्य एक परिपक्व और स्थायी मानसिकता की उपज है। यह परिपक्वता अनायास नहीं अती। यह अनुभव उपमा की उपज है। इस कारण अहिसंक रूप है। वह लाचारी नहीं शक्ति हैं... व्यंग्य गुस्से का ही गहरी जानकारियों, मानवीय रिश्तों, मनोभावों और पुष्ट तथा परिपक्व संवेदनाओं की जमीन पर उगता है।''

डॉ. शंकर पुणताम्बेकर – ''व्यंग्य युग की विसंगतियों की वैदग्हयपूर्ण तीखी अभिव्यक्ति है। युग की विसंगतियाँ हमारे चारो और के यथार्थ जगत् से वैद्धग्ध्य इन विसंगतियों को वहन करने वाले शैली सौष्ठव से, तथा तीखापन, विसंगति एवं वैदग्ध्य के चेतना पर पड़ने वाले मिले जुले प्रभाव से संबंधित है।''

व्यंग्य वैदग्ध्य में ब्राह्मण।
प्रहार में क्षत्रिय, भेद लक्ष्य में वैश्य
और मान्यता में शुद्र है।

नरेन्द्र कोहली :- ''कुछ अनुचित अन्यायपूर्ण अथवा गलत होते देखकर जो आक्रोश जगता है। वह यदि काम में परिणित हो सकता है तो अपनी असहायता में वक्र होकर जब अपनी तथा दूसरों की पीड़ा पर हँसने लगता है । तो वह विकट व्यंग्य होता है। पाठक के मन को चुभता- सहलाता नहीं कोड़े लगाता है। अतः सार्थक और सशक्त व्यंग्य कहलाता है।'' 30

''संस्कृत आचार्यों ने 'व्यंग्य' का अर्थ इस प्रकार दिया है। ''शब्द का व्यंजना पुर्त्ति के द्वारा होना वाला अर्थ।''

डॉ. शेरजंग गर्ग :- उक्त अर्थ को इस तरह स्पष्ट करते है ''किसी भी शब्द का परतदार अर्थ या वृ-तानुगामी झंकारमय व्यंज्ना व्यंग्य होती है।''

डॉ, बालेन्दु शेखर तिवारी इसकी गहराई तक पहुँचकर इस तरह समझाते हैं-

''व्यंग्य'' 'वि' उपसर्गपूर्वक ''अञ्ज'' धातु में ण्यत् प्रत्यय लगाकर बनाया गया शब्द है। जिसके कई अर्थ है विविधा द्वारा निर्देश, गूद अथवा अप्रत्यक्ष इंगित के द्वारा निर्देश, संकेतित अर्थ और शब्द की तीसरी शक्ति व्यंजना द्वारा निर्दिष्ट अर्थ। इन विभिन्न अर्थो से मिलते-जुलते किंचित उद्देश्य संकलित विशिष्ट अर्थ में ''व्यंग्य'' शब्द का प्रयोग आज हो रहा है। 31

भारतीय आलोचकों की परिभाषाये :- पाश्चात्य साहित्य में 18 वी सदी में व्यंग्य विधा के रूप में समृद्ध एवं सुविकसित हो गया था। तब भारतीय साहित्य में हास्य-व्यंग्य का रूप प्रचलित तो था, किन्तु उसे स्वतन्त्र विधा के रूप में स्वीकारा नहीं गया था। भारतेन्दु युग के व्यंग्यकारों ने एक स्वतंत्र विधाका रूप देकर इसका श्री गणेश किया। तब भी व्यंग्य की शास्त्रीय परिभाषा का आभाव रहा था। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात भारतीय साहित्यकार पश्चिमी साहित्य के रूप में प्रभावित हुआ। भारत की स्वतन्त्रता तक व्यंग्य विधा की पृष्ठभुमि संपूर्ण तैयार हो चुकी थी। और उस समय भारतीय विद्वानों ने अपनी-अपनी परिभाषाये दी।

डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी के मतानुसार-आलम्बन के प्रति तिरस्कार, उपेक्षा या भर्त्सना की भावना को लेकर बढ़ने वाला हास्य ही व्यंग्य कहलाता है। 32

डॉ. कृष्णदेव झारी :- ने व्यंग्य को हास्य के रूप में स्वीकार करते हुए कहा हैं कि ''जब हास्य में कटुता आ जाती है तो वह हास्य व्यंग्य कहलाता है।'' 33

प्रेमनारायण शुक्ल ने :- व्यंग्य के मानव कल्याण की उद्देश्यपूर्ण साहित्यिक रचना बताया है। ''मानवमात्र के सामूहिक सुधार का उद्देश्य लेकर आलोचनात्मक दृष्टिकोण के साथ विनोद तथा वाक्पटुत्वपूर्ण साहित्य रचना की प्रणाली का नाम उपहास व्यंग्य है। 34

डॉ. भगवानदास कहार के अनुसार :- ''वस्तुतः व्यंग्य संयम एवं विवेकपूर्ण शाब्दिक प्रहार की वह कलात्मक और व्यंजनापूर्ण साहित्यिक अभिव्यक्ति या एक विशिष्ट प्रविधि है जो विसंगतियों को अर्जुन के लक्ष्यभेदी अमोघ तीर की तरह निर्मूल कर अपने अभीष्ट को पूर्ण करती है।'' 35

डॉ. वीरेन्द्र मेहदास्ता ने विसंगतियों पर साहित्यिक प्रहार करने की वृत्ति को व्यंग्य कहा है। ''व्यंग्य मानव जगत की मुर्खताओं तथा अनाचारों असंगतियों तथा विसंगतियों को प्रकाश में लेकर उनके उपहास्य अथवा धृणोत्पादक रूप पर आलोचनत्मक प्रहार करने में समर्थ एक, साहित्यिक अभिव्यक्ति है।''36

डॉ. सुरेश महेश्वरी के शब्दों में कहे तो ''व्यंग्य युगीन विसंगतियों को वेदग्ध्यपूर्ण शैली में जविन का तीखा प्रहारात्मक स्वर है।'' 37

डॉ. शांतारानी के अनुसार : ''व्यंग्य किसी संस्था, समाज, व्यक्ति अथवा समूह की दुर्बलताओं तथा अवगुणो का उद्घाटन कर उस पर आक्षेप करता है।'' 38

सुबोध कुमार श्रीवास्तव :- ''व्यंग्य वह है जो पाठक के बहिरंग को तो हँसने

के लिए बाध्य कर देता है। किन्तु उसका मानस उसी की हँसी को स्वीकार नहीं कर पाता और एक अनक ही चुभन महसूस करता है।'' 39

लतीफ घोंघी :- ''संवेदनाशीलता के साथ यदि कोई भी अंश दिल को गुदगुदाता है। या कहीं कोई हल्की-हल्की सुरसुराहत उभरने लगती है। और पाठक की आँखे जब अनुभूति के अतिरेक से और भी अधिक तल्लीनता के साथ रचना में गुंथ जाती है और पिन की चुभन - सा मीठा-मीठा दर्द ओठों के कोनों पर लरज उठता है तब मैं मानता हूँ, कि व्यंग्य कारगर हुआ है।''40

व्यंग्य की परिभाषा

पाश्चात्य विद्वानों की व्यंग्य विषयक परिभाषाएँ :-

व्यंग्य की व्याख्या एवं स्वरूप विश्लेषण में पश्चिमी विद्वानों ने अपने विभिन्न मंतव्य प्रस्तुत किये हैं। इसके द्वारा व्यंग्य के विविध पहलुओं पर विचार करके बहुत सी व्याक्याएँ उपलब्ध होती है।

ओक्सफोर्ड इग्लिश डिक्शनरी के अनुसार ''A Poem or in modern use sometime a prose composition, in which prevailing vice or follier are held up to ridicule or prose internded to ridicule a particular person or class of perosns, a lampoon.''41

अर्थात् ''व्यंग्य वह पद्यमय अथवा गद्य रनचा है जिसमें प्रचलित दोषों अथवा मूर्खताओं पर अतिश्योक्ति के साथ उपहास किया जाता है। इसका उद्देश्य किसी व्यक्ति अथवा समाज के किसी वर्ग का उपहास करना होता है। जो एक निन्दा-लेख के समान होता है।''

ए. निकाल के अनुसार ''व्यंग्य इस सीमा तक कटु हो सकता है कि वह किंचित भी हास्यजनक न हो। व्यंग्य बहुत तीखा वार करता है। इसमें कोई नैतिक बोध नहीं होता। इसमें दया, विनम्रता एवं उदारता का लेश भी नहीं होता। वह पूरी निर्दयता से प्रहार करता है। वह व्यक्तियों के चरित्र पर आक्रमण करता है। वह युग की समूची परिस्थितियों की धज्जियाँ किसी को भी क्षमा किए बगैर उड़ाता है।'' 42

इन्साइक्लोपीडिया बिटानिका के अनुसार ''Satire in its literary aspect may be defined as the expression in adequate terms of sense of amusement or disgust excited by the ridiculous or tunseemly, provided that humour is a distinctly, recgonizable

element and that the utternace is invested wsith literary form, without humour sative is investive; without literary form, it is more clownish feeling.''43

अर्थात् ''साहित्यिक दृष्टि से व्यंग्य उपहासास्पद अथवा अनुचित वस्तुओं से उत्पन्न विनोद या धृणा के भाव को समुचित रूप से अभिव्यक्त करने की संज्ञा है जिसमें हास का भाव अपेक्षित हो और उक्ति साहित्यिक हो। हास्य के अभाव में विदूषक की ठिठोंली मात्र बन जाता है।''

''If you dictect the ridicule & your kindness is chilled by it, you are stipping into the grasp of satere''44

अर्थात् ''यदि आप कास्यास्पद का इतना अधिक मज़ाक उड़ाते है कि उसमें दयालुना ही समाप्त हो जाय तो आप व्यंग्य की सीमाओं में प्रवेश कर जात हैं।''

जोन एम. बुलिट के अनुसार ''Whether good or bad, general or particular, true or false, sevage or humouro us, prosoic or poetic - any literary attack upon the vice of holly or man & manners may be contained under the general word satire.''45

अर्थात् ''मनुष्य अथवा उसके आचारों की मुर्खताओं या सदोषता पर किया गया साहित्यिक प्रहार, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, सामान्य हो या विशिष्ट, सत्य हो या असत्य, क्रूर हो या हास्यास्पद, गद्य हो या पद्यमय -सब ''व्यंग्य'' शब्द के अन्तर्गत हैं।''

एस. जे. पोट्स के अनुसार – ''व्यंग्य गाली-गलौज या व्यक्तिगत आक्षेप मात्र नहीं है। उसमें आलम्बन के विकृत रूप का उपहास किया जाता है अथवा वचन-वैदग्ध्य के माध्यम से उसकी तुलना किसी हास्यास्पद वस्तु के साथ ही जाती है।''46

कवि स्विफ्ट के अनुसार – ''Satire is a sort of glass, where is beholders generally discover everybody's face, but thEH$r own, which is the chief reason for the reception it meets inthe world and that so very few are affended with it''47

अर्थात् ''व्यंग्य एक प्रकार का शीशा है जिसमें देखनेवाले को अपने चेहरे के अतिरिक्त प्रत्येक का चेहरा दिखाई देता है। यही मुख्य कारण है कि विश्व में व्यंग्य का स्वागत किया जाता है तथा कुछ लोंग इससे अप्रसन्न होते हैं।''

वैब्सटर्स न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी के अनुसार :– व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक रचना है। जिसमें मानवीय अथवा व्यक्तिगत दुर्गुणों, मूर्खताओं, दुराचारों अथवा दुर्बलताओं की निन्दा करने के लिये हास्य, उपहास, विद्रूप या अन्य किसी ऐसे माध्मय का उपयोग किया जाता है, और ऐसा करने के पीछे कभी-कभी सुधार की इच्छा भी रहती है। इस परिभाषा से स्पष्ट है कि व्यंग्य में वे विसंगतियाँ आधार बनकर प्रस्तुत होती है, जो करणीय नहीं है। 48

चाटर्स लैम्ब : ने कहाथा, कब्र के पत्थरों पर व्यंग्य अंकित नहीं होता। बात सही है व्यंग्य समकालीन जीवन की अनचाही स्थिीतियों से जन्म लेता है। हम जो चाहते हैं उसके मेल में जब हमारा यथार्थ नहीं होता, तब हमारे भीतर असंतोष होता है, आक्रोश जन्म लेता है, और उन्हीं से व्यंग्य की अभिव्यक्ति होतीहै। व्यंग्य आदर्श और यथार्थ की टकराहट से फूटी हुई चिनगारी है। 49

रिचार्ड गारनेट द्वारा :– व्यंग्य की परिभाषा दी गई है, जिसमें कहा गया है कि वह हास्यास्पत या भद्दी वस्तु द्वारा उत्पन्न मनोरंजन या उसमें अरूचि की भावना की, उपर्युक्त शब्दावाली में, अभिव्यक्तिहै। शर्त यह है कि उसमें परिहास एक अलक से पहचाना जाने वाला तत्त्व हो और वह कथन साहित्यिक रूप में निर्मित हो। बिना परिहास के व्यंग्य ''प्रभर्त्सना'' है, बिना साहित्यिक रूपके वह केवल विदूषकीय खिल्ली उड़ाने के समान है। 50

स्वरूपतः हास्य प्रभेद और व्यंग्य :

पश्चिमी साहित्य में व्यंग्य को हास्य के प्रभेद के रूप में स्वीकृत किया गया है। पश्चिमी समीक्षकों ने ''कामेडी'' के संदर्भ में हास्य के निम्नाकित भेद किये है।

(1) स्मित हास्य (Hamour)
(2) व्यंग्य (Satire)
(3) वाग वैदग्ध्य (Wat)
(4) वक्रोक्ति (Irong)
(5) प्रहसन (Force)
(6) पेरौडी (Parody)

उपयुक्ति भेद के अलावा विचारकों ने उपहास (सर्काज्म) और परिहास (स्पोट, जेस्ट, प्लै जैंटरी) को भी हास्य के भेद क अंतर्गत माना हैं। हास्य के यह भेद व्यंग्य के मूल रूप से किसी न किसी प्रकार भिन्न हैं। इस भेद रेखा की सूक्ष्मता

को समझते हुए इसका अन्तर स्पष्ट करना अत्यंत आवश्यक है।

स्मित हास्य और व्यंग्य :- स्मित का साम्य होने के कारण हास्य के प्रथम स्वरूप को स्मित कहा गया है। पाश्चात्य साहित्यकारों में हास्य में करुणा एवं सहानुभूति जैसे भावों का भी समावेश किया है।

मेरिडिथ के अनुसार :- The stroke of the great hamourist is world wide with light of tradedy in his laughter. 51

भारतीय साहित्य में रजोगुण के अभाव और सत्वगुण के आविभाव से हास्य की संभावना बताई है। 'स श्रृंगार इतीरतः। तस्मादेव रोजहीनात्स भत्वाद् हास्य सम्भवऋ।'52

बरसाने लाल चतुर्वेदी ने व्यंग्य को हास्य का भेद स्वीकार करके पाश्चात्य समीक्षकों का समर्थन किया है। हास्य निष्प्रयोजन और स्वच्छन्द होता है। हास्यपरक रचना को ससुनने या पढ़ने के बाद जो हास्य उत्पन्न होता है, वह क्षणिक है हास्य मुक्त एवं संवेदनशील होता है हास्य आनंद प्राप्ति के अतिरिक्त कुछ नहीं कर सकता, जबकि व्यंग्य प्रयोजन बद्ध होता है। तथा बुराइयों का पर्दाफाश करता है। व्यंग्य को पढ़ने से या सुनने से हास्य उत्पन्न होता है, साथ में वाचक या श्रोता को सोचने पूर प्रेरित करता है। व्यग्य संवेदनशील और गूढ़ होता है। 53

हास्य हृदय के भावों को तथा व्यंग्य बुद्धिगत चेतना को जागृत करता है।

ऊषा शर्मा के अनुसार : ''हास्य अस्थायी भाव है। यह उस विद्युत छटा के समान है जो क्षण भर में चाक चौंध कर गति पकड़ती है, उत्कर्ष पर आकर दूसरे ही क्षण विलीन हो जाती है।'' 54

बरसाने लाल चतुर्वेदी के अनुसार :-''स्मित हास्य वास्तव में करुणा सिक्त हास है मुक्त हास है तथा सजल है।... आलम्बन के प्रति तिरस्कार, उपेक्षा या भर्त्सना की भावना लेकर बढ़ने वाला हास्य, व्यंग्य कहलाता है। हिन्दी साहित्य में हास्य का यह प्रभेद प्रचुर मात्र में मिलता है।''55

डॉ. शेरजंग गर्ग हास्य और व्यंग्य के बारे में कहते हैं कि- ''हास्य निष्प्रयोजन होता है और यदि उसका कोई प्रयोजन होता है। तो वह निश्चत ही विशिष्ट नहीं होता जबकि व्यंग्य निष्प्रयोजन नहीं होता और उसका प्रयोजन वास्तव में गूढ़ और मार्मिक होता है।'' 56

रामनारायण उपाध्याय : हास्य और व्यंग्य का अंतर स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि- ''जो अंतर एक सर्कस के जोकर तथा प्रखर प्रतिभाशाली बर्नाड शो में है। हँसी तो किसी के ठोकर लगकर गिर जाने से भी आ सकती है। लेकनि व्यंग्य का जन्म दर्द से होता है।' 57

बालेन्दु शेखर तिवारी के दृष्टिकोण से 'हास्य का लक्ष्य शुद्ध रूप से मनोरंजन होता है। व्यंग्य का वास्तविक उद्देश्य है शोधन एवं आक्षेप द्वारा दोष सुधार एवं परिवर्तन। स्पष्ट ही हास्य का सम्बन्ध हृदय की उन्मुक्तता से है। जबकि व्यंग्य का नाता मस्तिक की कचोट से होता है। हास्य का जन्म असंगतियों के बीच आनंदवश होता है। उसकी कोई गंभीर वैचारिक पृष्ठभूमि नहीं होती। लेकिन व्यंग्य का जन्म परिवेशगत अन्तविरोधो के बीच आक्रोशवश होता है, हास्य के मूल में सुख की अनुभूति रहती है, जबकि व्यंग्य के मूल में कष्टानुभूति रहती है। और यह एक विद्रोही भाव है।'58

उपहास और व्यंग्य : उपहास को पाश्चात्य साहित्य में 'सरकाज्म या रिडीक्यूल' के रुपमें व्याख्यायित किया है।

'व्यक्ति या वस्तु को क्रीड़ा, विनोद या मजाक़ करने के लक्ष्य को लेकर की गई क्रिया या प्रयत्न, जो कि हास्योन्मुखी भाषा में उसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति उदभूत होता है, उपहास है। 59

उपहास का अर्थ है, हँसी या मजाक उड़ाना। किसी को तुच्छ या हीन बताकर उसे लज्जित करना या उसकी हँसी उड़ानी। हँसी-मजाक का भाव प्रधान होता है और तुच्छ या लज्जित करने का भाव गौण होता है।

उपहास का प्रहार प्रत्यक्ष रूप में होता है। एलेकजेंडर बेन के शब्दों में- 'उपहास का शब्दों के अर्थ ठीक-ठीक वहीं होता है, किन्तु एक तीव्र, कटु, ताना मारनेवाली तीक्ष्णता लिए हुए। यह शेष और क्रोध का औजार है, प्रहार करने का अस्त्र है।'60

उपहास और व्यंग्य का अंतर स्पष्ट करते हुए शेरजंग गर्ग लिखते हैं कि - ''उपहास में व्यंग्य की भाँति आलोचना का भाव तो होता है, किन्तु उसमें मानवीय करुणा एवं सहानुभूति की वह अजस्त्र धारा प्रवाहित नहीं होती, जो कि व्यंग्य का प्राण होती है, व्यंग्य में यह आवश्यक है कि उसमें आलोचना के साथ-साथ कोई मानवीय अथवा व्यापक रजानीतिक, सामाजिक सन्दर्भ भी हो, उपहास में ऐसा अनिवार्य नहीं

है।'61

डॉ. कहार के अनुसार : उपहास व्यंग्य का उपकारक शास्त्र हो सकता है। इसमें व्यग्य की भांति गम्भीरता, तटस्थता एवं सूक्ष्मता जैसे गुणों की मात्रा अधिक नहीं रहती। 62

परिहास और व्यंग्य :- परिहास (स्पोर्ट, जेस्ट, प्लैजेटरी) परिहास का अर्थ हास्य के रूढ़ अर्थों से बहुत भिन्न होता है। परिहास में बहुत जोरो की हँसी पैदा की जाती है। परिहास का मुख्य प्रयोजन आनन्दोत्पत्ति के अतिरिक्त कुछ नहीं होता।

ऐसी स्थिति में परिहास और व्यंग्य में स्पष्ट ही बहुत अधिक अन्तर है। व्यंग्य में अगर परिहास का भाव होता भी है तो वह निष्प्रयोजन तो बिल्कुल नहीं होगा, दूसरा यह भी आवश्यक नहीं है कि व्यंग्य में परिहास हो ही। 63

हास्य की तरह परिहास में भी हँसी पैदा की जाती है, हँसी मजाक इसके प्रमुख अंग है। परिहास का मुख्य प्रयोजन आनंद की प्राप्ति करना है।

परिहास द्वारा किसी की भी खिल्ली या कटाक्ष किया जाये तो उसका उपशमन प्रेमाश्रु द्वारा तुरन्त कर सकते है, किन्तु व्यंग्य में किसी के प्रति विरोध या आक्रोश प्रकट करे तो उसका शमन करना अनिवार्य नहीं है।

'सहानुभूति और करूणा' को परिहास का आवश्यक गुणमाना है। 'सहानुभूति परिहास की जननी है तो धृणा व्यंग्य की जननी है।'64

वाक् वैदग्ध्य (Wit) और व्यंग्य :- अंग्रेजी शब्द 'विट' को हिन्दी में कई नामों से पुकारा जाता है। जैसे वाक्वैदग्ध्य वाक्- चातुर्य, बुद्धि विलास और संचोतथा। विवेकयुक्त शब्दों की मितव्ययिता से वैदग्ध्य का जन्म होता है। वचनों की विदग्ध्यता से जो उक्ति-चमत्कार उत्पन्न होता है। उसे 'विट' कहा जाता है।

वैवस्टर के अनुसार :- 'स्पष्टतः असम्बद्ध वस्तुओं के माध्यम से आश्चर्यजनक समानता खोज निकालने तथा उन्हें होशियारी से अभिव्यक्ति करन की क्षमता को विट कहा जाता है।'

गुलाम अहमद फुरकत के शब्दों में - 'विट एक तरफ तो जहानत से ताल्लुक रखती है तो दूसरी तरफ शोखी से। अर्थात् 'विट' एक और बौद्धिकता से संबन्धित है तो दूसरी विनोद से, साथ ही वाक्वैद्ग्ध्य के लिए विचारों की चमत्कारिक ओभिव्यक्ति भी अत्यधिक आवश्यक है।'65

एडीशन में Wit की परिभाषा देते हुए कहा है। कि ''पदार्थो के जिस सम्बन्ध

दर्शन से पाठकों में प्रसन्नता और आश्चर्य या चमत्कृति उत्पन्न हो और उसमें भी विशेषतः चमत्कृति जान पड़े, उसे विट् कहते हैं।'66

शेरजंग गर्ग के अनुसार :- ''वाक् वैदग्ध्य और व्यंग्य में सबसे बड़ा अंतर यह है कि वाक् वैदग्ध्य स्वंय में व्यंग्य नहीं होता, उसमें व्यंग्य की संवेदना, करुणा, प्रहारक्षमता, गंभीरता तथा मार्मिकता द्वारा ही व्यंग्य की गरिमा उत्पन्न होती है।'' 67

हिन्दी में 'विट्' को कई नामों से पुकारा जाता है। जैसे- वचन वैदग्ध्य, वाक् वैदग्ध्य, उक्ति चमत्कार, हाज़िर जवाबी, बुद्धि विलास, संचोटता, वाक्-चातुर्य आदि। शब्दों में विरोध अथवा व्यंग्यात्मक अर्थ होने के कारण 'Wit' को Contra Stantithesis Irony भी कहते हैं।

''शब्दों में विवेक की मित्तव्ययिता वैदग्ध्य को जन्म देती है। वचनों की विदग्धता के कारण जो उक्ति-चमत्कार होता है। उसे 'विट' कहते हैं।'68

वक्रोक्ति और व्यंग्य – जब किसी बात को टेढ़े-मेढ़े वाक्यों द्वारा प्रस्तुत की जाय तथा कहने की शैली अलग और उसका अर्थ दूसरा निकलता हो तो उसे वक्रोक्ति कहते हैं।

एलेक्जेन्डर ने वक्रोक्ति के संदर्भ में कहा है कि- 'वक्रोक्ति में व्रकता के वास्तविक आशय को दर्शाने के लिए स्वर और शैली को कुछ ऐसे घुमाफिरा दिया जाता है कि उसका अर्थ कथ्य के पूर्णतः विपरीत हो जाता है।'69

'वक्रोक्तिकार भी धनुष की भाँती झुठि नम्रता में झुककर तीर की तरह चोट करता है इसमें स्तुति तथा निन्दा दोनों झूठी होती हैं। स्तुति, निन्दा तथा वक्रोक्ति में भेद ध्वनि का है, काकु का है। ध्वनि में ही अर्थ गूढ़ रहता है। वक्रोक्ति तथा सच्ची स्तुति या निन्दा में वही साम्य है जो कोयल और कौए में है। वक्रोक्ति का सच मानना विश्वासधात का आखेट बनना है।'70

अगर वक्रोक्ति में संवेदनशीलता और सहृदयता जैसे गुण मौजूद हो तो वह वक्रोक्ति व्यंग्य उत्पन्न कर सकती है। वक्रोक्ति में टेढ़ी बात कही जाती है जबकि व्यंग्य में सीधी बात कहकर आलोचना या प्रहार किया जाता है।

पैरोडी और व्यंग्य :- 'पेरौडी' अंग्रेजी शब्द है। हिन्दी साहित्य में इसी शब्द का प्रयोग हुआ 'पैरोडी में किसी भी विशिष्ट शैली या लेखक की ऐसी हास्यपरक अनुकृति होती है कि वह गम्भीर भावों को परिहास में परिणित कर देती है।'71

Sir Arthur Quiller Covet ने पेरौडी का सम्बन्ध कविता और

विशेषतःउच्च कविता से ही माना है। Arthur symons नामक विद्वान ने लिखा है कि "Love and admire and respect theoriginal admiration and laughter is the very issencs of the act or art parody.'72

(इसका आशय यह है कि मूल के प्रति प्रेम तथा आदर में कमी नहीं आनी चाहिए प्रसंसा तथा हास्य पैरोडी की जान हैं।)

पैरोडी के तीन प्रकार माने गये हैं। (1) शाब्दिक (2) आकार -प्रकार (संबंधी) (3) भावना संबंधी। भारतेन्दु ने पैरोडी के 'आभास' की संज्ञा दी थी। परन्तु यह शब्द प्रचलित नहीं हुआ. हिन्दी साहित्य में 'पैरोडी' शब्द ही प्रचलित रहा है।

''पैरोडी हास्य युक्त व्यंग्य के साथ जुड़ी रहती है। इसका प्रयोजन क्योंकि हास्य की सृष्टि करते हुए निड़म्बनाओं को उभारना और मूलतः उन पर व्यंग्य करना होता है, इसलिए पौरोडी व्यंग्य की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बन सकती है। जहाँ पैरोडी मात्र हास्य की सृष्टि करती है, वहाँ वह हास्य के निकट होती है और वहाँ उसे सामाजिक, राजनैतिक, वैयक्तिक, विसंगतियों को उजागर करने के लिए काम में लाया जाता है, जहाँ वहाँ व्यंग्य के क्षेत्र में प्रवेश कर जाती है।'' 73

हिन्दी में पैरोडी को हास्य-रस के कवियों ने विशेष रूप से अपनाया है। चिरंजीत ने कई श्रेष्ठ गीतों की पैरोडियाँ (पैरेडीदास) के उपनाम से लिखी। काका हाथरसी ने फिल्मी गानों से लेकर साहित्यिक रचनाओं की पैरोडियाँ लिखी ।74

पैरोडी हास्ययुक्त व्यंग्य के साथ जुड़ी रहती है। इसका प्रयोजन क्योंकि हास्य की सृष्टि करते हुए बिडम्बनाओं को उभारना और मुलतः उन पर व्यंग्य करना होता है, इसलिए पैरोडी व्यंग्य की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम बन सकती है। जहाँ पैरोडी मात्र हास्य की सृष्टि करती हो, वहाँ हास्य के निकट होती है और जहाँ उसे सामाजिक, राजनीतिक वैयक्तिक विसंगतियों को उजागर करने का काम में लाया जाता है। वहाँ वह व्यंग्य के क्षेत्र में प्रवेश कर जाती है। 75

प्रहसन और व्यंग्य :- प्रहसन को अंग्रेजी में कामेडी या Force कहते हैं। मैरिडिथ ने कामेडी के उद्भव में लिखा है -

"Comedy we have to admit was never on of the most honoured of the muess, she was inher origin, short of slaughter, the loudest exbression of little. civili zation of man' 76

अर्थात हमें यह स्वीकार करना पडेगा कि प्रहसन का कालओं में कभी उच्च

स्थान नहीं था. प्रारम्भ में ये हत्या से थोड़ी नीची वस्तु थी जिसमें अविकसित सभ्यता की प्रबल अभिव्यक्ति मिलती थी।

प्राचीन यूनानी प्रहसनों में देवताओं पर भी हास्यव्यंग्य किया गया है। इतना ही नहीं एरिस्तोफेनिस के The Frog में मेढ़क तथा अन्य जलचर प्राणियों के साथ मनुष्य के स्वभाव एवं आचरण की तुलना हास्य व्यंग्यात्मक तरीके से की है। पाँचवी सदी के गीक्र साहित्य में प्रहसनों में धर्म और नीति का मज़ाक हास्यास्पद रूप में किया गया है।

भरतमुनि के अनुसार - 'प्रहसन में सामान्य जनता में प्रचलित किसी दुराचरण एवं-पाखण्ड का प्रदर्शन अनिवार्य है। 77

प्रहसन का हास्य अवेयक्तिक और सार्वजनिक होता है तथा साथ में शिष्ट भी होता है। जबकि व्यंग्य का हास्य वैयक्तिक होता है। किन्तु किसी के मुहँ अथवा पीठ पर घाव के समान होता है।

व्यंग्य के तत्त्व :- मात्र हृदय के भावात्मक आक्रोश से नहीं बल्कि बुद्धि के आश्रय से व्यंग्य मार्मिक बन जाता है। व्यंग्य में निहित तत्त्वों की विविध व्यंग्य चिन्तकों ने चर्चा की है।

शेरजंग गर्ग के अनुसार - 'व्यंग्य में निहित संवेदनशीलता, गम्भीरता, बौद्धिकता, सांकेतिकता एवं तटस्थ विश्लेषण ही व्यंग्य को सार्थक श्रेष्ठ तथा गहरा बनाते हैं।'78

डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी ने व्यंग्य के चार मूल तत्त्वों की अनिवार्यता बताई है।

(1) साहित्यिक और साहित्य विधा

(2) दूसरों की अथवा अपनी मूर्खताओं की हँसी उड़ाना।

(3) व्यंग्य की सृष्ठि के लिए हास्य, वक्रक्ति, वचन विदग्धता रूपी उपकरणों का प्रयोग।

(4) सुधार करने का उद्देश्य। 79

डॉ. वीरेन्द्र मेहदीस्ताँ,ने व्यंग्य में तीन तत्त्वों की आवश्यकता बताई है। जैसे (1) आलोचना (2) हास्य और बीभत्सनता (3) सुधार । 80

डॉ. हरिशंकर दुबे ने व्यंग्य के विधायक तत्व निम्नांकित बताये हैं।

1. विसंगतियों का कथ्य

2. चरित्रांकन का वैशिष्ट्य

3. सत्यान्वेष परक दृष्टि

4. भिन्नताओं का मिश्रित भाव

5. भाषागत- वैशिष्ट्य

6. फन्तासी-प्रयोग

7. बुद्धि पक्ष का प्राधान्य

8. तटस्थ विश्लेषणात्मकता

9. संवेदना की पृष्ठभूमि

10. संक्षिप्तता एवं संहिति। 81

डॉ. सुरेश महेश्वरी ने 'व्यथार्थता, संवनेदनशीलता, गम्भीरता, प्रोढ़ भाषा, बौद्धिकता, संकेतिकता और तटस्थ विश्लेषण जैसे तत्त्वों की व्यंग्य में अनिवार्यता मानी है।'82

(1) यथार्थता : समाज एवं देश में व्याप्त विसंगतियों को यथार्थ के धरातल पर रखना ही व्यंग्य की श्रेष्ठता है। समाज की यथार्थ स्थिति का चित्रण ही व्यंग्य का अभीष्ट होता है। ''व्यंग्यकार समाज का सब से जागरुक प्राणी एवं यथार्थ का कुशल चितेरा होता है।'' 83

व्यंग्य, युग की वास्तविक परिस्थितियों को दर्शाता आईना है। आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक जितना भी व्यंग्य लेखन लिखा गया है। उसमें अपने-अपने युग की विडम्बनाओं, विकृतियों का चित्रण किया गया है। जैसे भक्तिकाल के साहित्यमें पाखंडी एवं ढोंगी लोगों के ऊपर व्यंग्य मिलता है। भारेतन्दु युग में विदेशी शासन, विदेशी नीति, भ्रष्टाचार आदि पर राजनैतिक, व्यंग्य अधिक मिलता है इसी प्रकार स्वातंत्र्योत्तर युग में देश में व्याप्त भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी, नेताओं की बेईमानी, पर व्यंग्य किया गया है. राजनैतिक पृष्ठभूमि पर किया गया व्यंग्य उस समय की सव्यता को प्रस्तुत करता है।

व्यंग्यकार समाज में व्याप्त विकृतियों धार्मिक, सामाजिक राजनैतिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि स्तर की विसंगतियों का चित्रण हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। समाज में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, दुराचार, कुसंस्कारों को नष्ट करने के लिए जो तीव्र व्यंग्य प्रहार करता है। वह समाजोवदेशक होता है।

व्यंग्य के माध्यम से जिस यथार्थ परिस्थिति का चित्रण होता है, उसमें आक्रोश और प्रहारात्मकता अधिक दिखाई देती है।

(2) संवेदनशीलता – व्यंग्यकार सामान्य मनुष्य की तरह सुख व दुख जैसे भावों का अनुभव करता है उसकी यह संवेदना उसे व्यंग्य करने को विवश करती है। इसलिए व्यंग्य में निहित संवेदनशीलता व्यंग्यकार की वाचा बन पड़ती है। मानवीय संवेदना ही एक दूसरों के सुख-दुख समझने की प्रेरणा बनती है। जीवन के प्रति जो निराश पैदा होती है उसका शमन व्यंग्यकार अपनी लेखिनी के अनुचित क्रियाकलापो के द्वारा-प्रहारात्मक रूप से करता है।

व्यंग्यकार केवल अपने ही सुख-दुख की अनुभूति का ज्ञान नहीं कराता बल्कि सारे समाज एवं मानव मात्र की संवेदनाओं को अपने व्यंग्य के माध्यम से व्यक्त करता है। व्यंग्यकार की यह अनुभूति जिन्दगी के सुख और दुःख के पहलुओं को समझाने पर विवश करती है।

हरिशंकर परसाई ने देश समाज, सरकार और प्रजा में फैले झूठे संतोष को अपनी संवेदना में व्यक्त करते हुए कहा है कि- 'जो कौम भूखी मारी जाने पर सिनेमा में जाकर बैठ जाए, वह अपने दिन कैसे बदलेगी अदभूद सहनशीलता' इस देश के आदमी में। और बड़ी भयावह तटस्थता कोई उसे पीटकर पैसे छीन ले तो वह दान का मंत्र पढ़ने लगता है। 84

यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है। कि व्यंग्यकार की संवेदन-शीलता ही उसे व्यंग्य करने को प्ररित करती है।

(3) गंभीरता :– व्यंग्य में निहित गंभीरता उसे एक सम्मानकारक साहित्य बना सकती है। व्यंग्यमें यदि गंभीरता न आये तो वह हलका बन जायेगा। अतः व्यंग्य एक ऐसी शैली बन सकता है। जिसमें गंभीर विषयों को भी हलके-फुलके मनोरंजक रूप में ढ़ाल सके। पर इसमें यह आवश्यक है कि व्यंग्य में निहित गंभीरता के कथ्य पर प्रहार न हो।

''यदि व्यंग्य में किसी प्रकार की अगंभीरता परिलक्षित हो, तो भी उसे अगंभीर समझने की जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। इसका सीधा सा कारण यही है कि व्यंग्य स्वयं अगंभीरता, छिछरेवन, सतही मानसिकता और असंगतियों पर प्रहार करता है।'' 85

हरिशंकर परसाई ने अपने व्यंग्य लेखन को विनोदवृत्ति न समझकर एक गंभीर

चीज़ बताई है। अपनी कैफियत हूँ तो हँसना और हँसाना, विनोद करना अच्छी बाते होते हुए भी मैंने केवल मनोरंजन के लिए कभी नहीं लिखा। मेरी रचनाएँ पढ़कर हँसी आ जाना प्रासंगकि है, मेरा व्यंग्य को उपहास, मखौल न मान कर गंभीर चीज मानता हूँ।'' 86

(4) बौद्धिकता :– व्यंग्य में भाव या कल्पना की अपेक्षा बुद्धि का ज्यादा प्राधान्य रहता है। व्यंग्य हास्य-मिश्रित बौद्धिक प्रतिक्रिया है जिसमें बुद्धि तत्व के आधार पर यथार्थ और आदर्श को प्रस्तुत किया जाता है। अरस्तु ने बुद्धि को आत्मा की सर्वोच्च शक्ति माना है।

हरिशंकर दुबे के अनुसार – 'व्यंग्यकार की सोच बौद्धिक होती है और प्रस्तुति सजीव। 87

दुबेजी ने व्यंग्य में बुद्धि का जितना महत्व बताया है उतना ही हृदय की भावनाओं (सवेदनाओ) का महत्त्व माना है।

बौद्धिकता के आभाव से व्यंग्य में तार्किकता और वैज्ञानिकता आती है। ''बौद्धिकता से सोच की क्षमता का विकास होता है साथ ही रोचकता भी आती है। और बुद्धि के साथ की रोचकता की बुद्धि रस है।'' 88

डॉ. श्यामसुंदर घोष ने व्यंग्य को बुद्धि की परिपक्वता का लक्षण माना है और कहा है कि - 'व्यंग्य कोई भावुकता मूलक कर्म नहीं है। वह तो परिपक्वता लक्षण है। जब हम बहुत दीन-दुनिया देख लेते हैं, दर-दर ठोकरें खा लेते हैं, देखने सुनने और भोगने के बाद काफी चिन्तन, कर चुकते हैं तब हममें व्यंग्य का बोधिसत्व उदित प्रेता है।'89

(5) सामासिकता :– ''सामासिकता'' को सांकेतिकता का नाम भी दिया है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इसे बिना कहे भी सब कुछ कह देने वाली शैली कहा है, डॉ. नामावर सिंह इसे 'संक्षेप' अथवा 'शाब्दिक', 'मितव्ययिता' संज्ञा घोषित करते हैं।

सांकेतिकता अभिधा के सीधे और सरल शब्दों द्वारा अत्यन्त गहरे अर्थ को व्यंजित करनेवाली शैली है कम के कम शब्दों में अधिक -अधिन विचारों को प्रकट करना ही व्यंग्य की लाक्षणिकता मानी जाती है सामासिता का अर्थ है-

'गागर में सागर भर देना।' बिहारी का यह दोहा इसका प्रमाण है-

'नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल।

अली कली ही सौ बिंध्यौ, आगै कौन हवाल॥'

व्यंग्य की समासिकता उसकी गंभीरता और बौद्धिकता का प्रमाण होती है। थोड़े ही शब्दों में गूढ़ अर्थो को व्यक्त करना व्यंग्य में निहित सांकेतिकता है।

गुड़मैन के अनुसार - 'प्रभावकारी व्यंग्य वीर के समान होना चाहिए जो कि कम के कम समय में लक्ष्य को भेंद दे।' थोड़े में बहुत कुछ कह देना ही व्यंग्य का गुण है। विस्तार इसके प्रभाव को नष्ट कर देता है। 90

(6) तटस्थ विश्लेषण :- किसी के प्रति पूर्वाग्रह न रख कर बात को पूरी तरह समझकर उसके अंगों तथा तथ्यों का निरीक्षण करना ही तटस्थ विश्लेषण है। किसी पक्ष-विपक्ष की आड़ में छिप कर व्यंग्य करना लाजमी नहीं है। बल्कि इससे परे रहकर अपनी लेखनी के माध्यम से आलोचना करना ही तटस्थता कहलाती है। ''व्यंग्य में व्याप्त तटस्थ विश्लेषण जहाँ मनुष्य को स्वयं से परे सोचने पर विवश करता है। वहाँ उसके लिए अपनी ही विडम्बनाओं और कमियों को उभारने में भी सहायक होता है। तटस्थ विश्लेषण के अभाव में आत्मा विडम्बना की निर्मम अभिव्यक्ति संभव ही नहीं है और सत्य एवं कथ्य में मिलावट तथा कुत्रिमता को जन्म देती है।''91

व्यंग्य का उद्देश्य एवं प्रयोजन :- व्यंग्य का मुख्य उद्देश्य समाज में छिपे दुराचारों को सुधार करना ही है व्यंग्यकार अपने प्रहारात्मक व्यंग्य वाणों से समाज में प्रवृत्त भ्रष्टाचार, अत्याचार एवं दुषपरिणामों को व्यंजित करता है। व्यंग्यकार की इसी प्रकार की रचना समाज उपदेशक होती है। हम्बर्ट बोल्फ का कहना है कि- 'व्यंग्यकार का स्थान उपदेशक तथा हाजिर जवाब के बीच का होता है। उद्देश्य दोनों का एक ही है, किन्तु उसके प्रस्तुतीकरण का ढ़ंग अलग-अलग है। व्यंग्यकार उपदेशक की भाँति केवल सत्य की प्रतिष्ठा पर ही बल नहीं देता है अपितु वाग्वैद्ध्हय के द्वारा पाप का भाड़ां फोड़ करता है।' 92

उपदेश संबंधी भाषणों में अनाचार दुराचार, अत्याचार आदि कार्या की टीका की जाती है। उसे धिक्कारा जाता है। उसकी निन्दा की जाती है समाज सुधारको, धर्माचार्या आदि अपने उपदेशक प्रवचनों में कुत्ववस्था, कुरितिनीति तथा दुष्टों के प्रति प्रत्याघात करते हुए कुकर्मी का पर्दाफास करके मानवीय दुर्बलताओं को उजागर करते हैं।

व्यंग्यक्रान्ति का अग्रदूत होता है। व्यंग्य विध्वंश का नही बल्कि हसते, हसते विध्वंस को रोकता है। हरिशंकर परसाई सुधार के लिये नहीं बल्कि समाज की

विसंगतियों में बदलाव लाने के लिये व्यंग्य लिखते है, फिर भी व्यंग्य से सुधार होता है, इस बात को परसाई स्वीकार करते हैं।

वीरनेद्र मेहंदस्तिाँ के अनुसार - 'व्यंग्यकार अपने उद्देश्य में तभी सफल हो जाता है जब वह अपने लक्ष्य की बौद्धिक और मानसिक गन्दगी की सफाई कर उसे नई दिशा की ओर मोड़ दे।'93

व्यंग्य का उद्देश्य नैतिक उत्थान का होना चाहिए। व्यंग्य समाज का ऐसा आइना है जो समाज की कुरुपता को दूर करने में मदद करता है। भारतेन्दु युग से ही हमें सोदेश्यपूर्ण व्यंग्य साहित्य प्राप्त हुआ है। जो समाज एवं देश के लिए सुधारक बना है। स्वातंत्र्योत्तर युग में जो व्यंग्य लिखा गया वह दूसरों पर कटाक्ष करना। मनुष्य की विकृतियों को बदलना तथा अव्यवस्थित समाज में परिवर्तन लाना है। आज के आधुनिक युग में भी इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए व्यंग्यकार वैर्याक्तिक एवं वस्तुपरक व्यंग्य करने से नहीं चूकता।

डॉ. उषा शर्मा लिखती है कि- ''व्यंग्यकार नैतिकता' का पुजारी है वह विसंगतियों के पीछे हाथ धोकर पड़ा रहता है और उन्हें सुधारना या बदलना ही उसका प्रमुख लक्ष्य होता है।'' 94

डॉ. तिवारी कहते हैं कि- ''व्यंग्य एक चुभता काटा है जो वाणी, लेखनी के माध्यम से उत्पन्न होता है।''

परिवार समाज और राष्ट्र के लिए व्यंग्य उपयोगी आयुध का काम करता है। इसकी प्रयोजन शीलता ही हास्य से पृथक करती है और अपनी इसी सोद्देश्यता के कारण व्यंग्य दुर्गणों का शत्रु बनता है। 95

कई साहित्यकार अपनी रचनाओं में विसंगतियों का चित्रण करते हैं, तो कोई भारतीय समाज एवं संस्कृत की रक्षा करने के उद्देश्य से व्यंग्य लिखते हैं। व्यंग्यकार कभी-कभी पाठक की जिज्ञासा और आनंद के लिए व्यंग्य लिखने लगते हैं। व्यंग्यकार अपनी साहित्यिक गुणों को उजागर करने के उद्देश्य से लिखते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि जिस तरह उपदेशक अपने प्रवचन में सीधे सरल शब्दों से उद्देश्यको स्पष्ट करता है, उसी तरह व्यंग्यकार अपनी लेखनी के माध्यम से व्यंग्य में अपने उद्देश्य को अभिव्यंजित करता है।

व्यंग्य के प्रकार :- पश्चिम विद्वानों ने व्यंग्य के हास्य के प्रभेद के रूप में स्वीकार किया है। किन्तु आज व्यंग्य हास्य का एक मात्र प्रभेद न रहकर साहित्य की

एक सशक्त विधा के रूप में सामने आया है। कई व्यंग्य विवेचकों ने व्यंग्य के विविध प्रकारों की चर्चा की है।

व्यंग्य की अभिव्यक्ति क्योंकि कई प्रकार से होती है अतः व्यंग्य के प्रकार निश्चित करना सरल कार्य नहीं है। एक ओर ये प्रकार व्यंग्य करने अथवा लिखने की प्रेरणा पर निश्चित किए जा सकते हैं। प्रेरणा के आधारों में वैयक्तिक स्थितियाँ व्यंग्य किए जाने में पूर्ण रूप से सहायक हो सकती है तो दूसरी ओर ऐसी निर्वैयक्ति स्थितियाँ भी प्रेरक हो सकती है।

निर्वैयक्तिक स्थितियों में राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिवेश व्यंग्य की प्रेरणा दे सकता है साथ ही निर्वैयक्तिक व्यंग्य में ऐसी स्थितियों की विडम्बना को भी उभारा जाता है।

व्यंग्य में मानवीय दुर्बलताओं पर हँस हँसकर प्रहार किया जाता है तो कटु-गम्भीर होकर यथार्थ विसंगतियों का मुखौटा भी उतारा जाता है। इसके अतिरिक्त व्यंग्य में मनुष्य मात्र के दुखदैन्य के प्रति सहानुभूतिशील करुणा होती है।

डॉ. शेरजंग गर्ग ने प्रेरणा और प्रभाव के आधार पर व्यंग्य का वर्गीकरण किया है। 96

व्यंग्य के प्रकार :-

97

(क) प्रेरणा का आधार :- हम यह पहले ही बता चुके है। कि प्रेरणा के आधार पर व्यंग्य को दो रूपों, यथा, वैयक्तिक और निर्वैयक्तिक में विभक्त किया जा सकता है। वैयक्तिक रूप को भी दो प्रकार से देखा जा सकता है।

व्यंग्य को भी दो भागों में विभवत किया जा सकता है। यथा -

(1) राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक परिस्थितियों पर अथवा इन स्थितियों की विडम्बना को उभारने वाला व्यंग्य और

(2) दैवी एवं नियति को दारूणता को दर्शाने वाला व्यंग्य। व्यंग्य के प्रकारों को हम अलग-अलग समझेगे ।

(अ) वैयक्तिः वैयक्तिक व्यंग्य में किसी व्यक्ति-विशेष के दोषों, कमियों पर प्रहार किया जाता है अथवा उनकी आलोचना करते हुए उपहास किया जाता है। 98

(1) आत्म व्यंग्य :- आत्म व्यंग्य में रचनाकार अथवा व्यंग्यकार अपनी पीड़ाओं और आक्रोश को अपने ही ऊपर डालकर मज़ाक बनाता है। आत्म व्यंग्य के अन्तर्गत व्यक्ति द्वारा स्वयं पर किया जाने वाला समस्त व्यंग्य समाहित किया जा सकता है। स्वयं पर व्यंग्य करना कठिन कार्य है।

(2) परस्थ व्यंग्य :- परस्थ व्यंग्य में दूसरे व्यक्तियों को व्यंग्य का निशाना बनाया जाता है। इसमें आलोचना की टोपी उसी सिर पर फिट की जाती है। जिस पर आक्रमण किया जाना अपेक्षित हो। ऐसे व्यंग्य में कोई घुमाव-फिराव नहीं होता है। अर्थात् जिस व्यक्ति की आलोचना हो, उस पर सीधा आक्रमण किया जाता है।

(आ) निर्वेयक्तिक :- इस प्रकार के व्यंग्य को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। नीचे इन दोनों रूपों को अलग-अलग समझनें का प्रयत्न किया जा रहा है।

1. राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक परिस्थितियों पर अथवा इन स्थितियों की विडंबना को उभारने वाला व्यंग्य निर्वेयक्तिक व्यंग्य के इस प्रकार में व्यंग्यकर्ता द्वारा किसी व्यक्ति विशेष को आलोचना न करके उन राजनितिक सामाजिक, आर्थिक, आदि परिस्थितियों की विडम्बना पर प्रहार किया जाता है। 2. दैवी विपत्तियों एवं नियति की दारुणता को दर्शाने वाला व्यंग्य इस प्रकार के निर्वेयक्ति व्यंग्य में ऐसी दैवी विपत्तियों एवं नियति की दारुणता को दर्शाया जाता है। 99

(ख) प्रभाव का आधार : व्यंग्य के पड़नेवाले प्रभाव के आधार पर व्यंग्य को मुख्यतः तीन रूपों में देखा जा सकता है। (1) हास्य से युक्त व्यंग्य (2) कटु यथार्थ से युक्त व्यंग्य एवं, (3) करुण व्यंग्य.

(अ) हास्य युक्त व्यंग्य :- हास्य-युक्त व्यंग्य में प्रयोजनीयता तो होती है, मगर उसे हास्य के आवरण में लपेटकर कुछ इस तरह व्यक्त किया जाता है। कि उसका प्रहार बहुत तीखा न हो जाय और जिस पर व्यंग्य किया जाय वह भी कथ्य

की मार मधुर होती है। 100

(आ) कुट यथार्थ से युक्त व्यंग्य :: यो तो हर प्रकार के व्यंग्य में प्रायः सत्य की आभा रहती है। मगर कटु यथार्थ से युक्त व्यंग्य में हास्य-व्यंग्य के समान हल्का-फुल्का पन न होकर यथार्थ की कटुता को प्रहारात्मक अभिव्यकित मिलती है।

(3) तटस्थ विश्लेषण :- व्यंग्य में निहित तटस्थ विश्लेषण क्या होता है, इसे यदि संक्षेप में समझना चाहें। तो कहा जा सकता है कि परस्पर विरोधी पक्षों से (स्वंय तक से) अलग रहकर किसी पदार्थ अथवा बात के सब अंगो या तथ्यों की परीक्षा करना ही तटस्थ विश्लेण है। 101

डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी ने आश्रय के आधार पर व्यंग्य का वर्गीकरण किया है। यथा - (1) व्यक्तिगत व्यंग्य और (2) समिटगत समष्टिगत व्यंग्य का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है- व्यंग्य (1) धर्म-सम्बन्धित, (2) समाज- सम्बन्धित, (3) साहित्य- सम्बन्धित, (4) राजनीति -सम्बन्धित (5) मानवीय दुर्बलताओं से सम्बन्धित। 102

डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी ने व्यंग्य का वर्गीकरण इस प्रकार किया है। यथा - (1) चमत्कारीक विनोद वचन (Wit)(2) व्याजोक्ति (Irony) (3) उपहास (Sarcasm) (4) व्याकृति (Buslesqul) (5) आक्षेप (Comboan.)

डॉ. तिवारी ने जो वर्गीकरण किया है वह ''आलम्बन के आधार पर न होकर व्यंग्य की चारित्रिक भंगिमा के आधार पर किया है। इसके अतिरिक्त भर्त्सना (Imvective) छिद्रान्वेषण (Cynicism), विद्रुप (contrast) जैसे अन्य और भी स्वीकार किए गए है। डॉ. तिवारी ने पश्चिमी विचारकों के आधार पर ही अपना वर्गीकरण प्रस्तुत किया है।103

डॉ. विरनेद्र मेंहरीस्ताँ ने व्यंग्यके भेद, उसके साधन व तत्व के आधार पर किये हैं। उन्होंने साधन के रूप में (1) उपहास (Sarcasm) (2) विडम्बना (Irony) (3) अपकर्ष (Pimination) (4) अतिशयता (Exaggeralim) (5) वैदग्ध्य (Wit) की चर्चा करते हुए, उसी के आधार उपहासात्मक व्यंग्य, विडम्बनात्मक व्यंग्य, अपकर्षात्मक व्यंग्य, वैदग्ध्यात्मक व्यंग्य और अतिशयात्कम व्यंग्य जैसे व्यंग्य के पाँच प्रभेद माने है। 104

डॉ. भगवानदास कहारने व्यंग्य की शैली एवं प्रभाव के आधार पर व्यंग्य का वर्गीकरण किया है। यथा (1) हास्यात्मक व्यंग्य, (2) प्रहारात्मक व्यंग्य (3) करुण

या आत्मीयतापूर्ण व्यंग्य (4) विद्वेष या आपेक्ष मूलक व्यंग्य। 105

हास्य काव्य एवं व्यंग्य काव्य :-

हास्यकाव्य मनोरंजनार्थ लिखी गई कविताएँ हास्य कविताएँ कहलाती है, जो विपरित रीतियों या तथ्यों को हास्य या प्रहसन के वातावरण में प्रस्तुत की जाती है। इसमें कथ्योद्देश्य केवल हास्य का होता है, ऐसी कविताओं में निर्भय हाथरसी, काका हाथरसी, ओम प्रकाश आदित्य, हास्य कवि हुल्लड़, कुल्लड़, बेधड़क बनारसी, विश्वेश्वर शर्मा, प्रदीप चौबे अदिकी हास्य कविताओं का समावेश होता है।

जैसे - हिन्दी हास्य व्यंग्य साहित्य के जाने-माने एक मूर्घन्य कवि काका हाथरसी ने पूरे देश और विदेशों में अपनी प्रतिभा का पताखा फैराया हास्य-काव्य के द्वारा समाज में फैलती हुई विद्रूपताओं, विसंगतियों को फर्दा फाश किया है।

भारतीय समाज में पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव अत्यधिक तीव्र गति से हो रहा है। समाज के बदलते वातावरण एवं पाश्चात्य फिल्मो के प्रभाव से भारतीय समाज बदल गया है। समाज की बदलती हुई सभ्यता से समाज के प्रत्येक व्यक्ति को परिचित कराया है।

1. मेकप करके कार में, चली फिल्म स्टार, 2. हाथ दे रही इधर को, उधर चलाती कार। 3 उधर चलाती कार। सिपाही बोला - मैडम, कर दूँगा चालान, गलत क्यो चलती हो तुम? दिशा ज्ञान को हाथ नहीं, मैं दिखा रही हूँ। जरा नेल-पालिश, गीली है सुखा रही हूँ। 106

काका हाथरसी ने भारतीय समाज में होने वाले सांस्कृतिक मूल्यों के पतन को हास्य काव्य के द्वारा इस प्रकार प्रस्तुत किया है -

होती है नित गुफ्तगू, खड़के टेलीफोन,
दोनो दिल जब मिल गए, रोक सकेगा कौन।
रोक सकेगा कौन, व्यर्थ क्यों टाँग अड़ाओं,
रोड़ा बनकर लुढ़को, संकट में पड़ जाओ।
दखलंदाजी छोड़, मान लो उनका कहना,
(वरना) करें कोर्ट मैरेंज आप पछताते रहना। 107

काका हाथरसी ने हास्य काव्य का सहारा लेकर समाज के भ्रष्टाचार शिक्षा की बेकारी को कविता द्वारा उजागर किया है-

पढ़ना-लिखना है मना,

बनों, डेंजरमैन,

रक्खो पाकिट में छुरा, छोड़-

पैसिंल-पैन। 108

भारतीय समाज में भ्रष्टाचार का अतिरेक बढ़ गया है जिसका कारण राजनीति हैं भारतीय समाज में राजनीति में अत्यधिक भ्रष्टाचार का समावेश हो गया है, आज के नेता पद पाने के लिये उचित-अनुचित सभी प्रकार के कार्य करते हैं। आज की राजनीति में बढ़ती हुई विकृतियों को काका हाथरसी ने हास्य कविता के द्वारा उदाहरण दिया है -

मंत्री-पद की लूट है, लूट सके तो लूट,

अंतकाल पछताएगा, प्राण जाएँगे छूट।

प्राण जाएँगे छूट, मेज पर रक्खे पेपर,

बदल पार्टी, इस्तीफा परकर सिगनेचर।

कहँ काका, कवि, स्वतंत्रता का लाभ उठाओ,

राष्ट्र ध्वजा, फहरा करके फोटो खिचवाओं। 109

कवि ओमप्रकाश आदित्य ने समाज की विद्रूपताओ विसंगतियों को हास्य काव्य के द्वारा प्रस्तुत किया है। राजनीति में फैलते हुए भ्रष्टाचार पर यह हास्य कविता लिखी है-

फिर से चुनाव की लहर ने कहर ढ़ाया,

नदियों के साथ कैसे-कैसे नाले बह गए।

उल्लुओं को अंबुआ की डाल पर देखकर,

हौसले बसंत के, अनंत तक ढ़ह गए।

भारत में कभी गंगू, तेलियों का राज होगा,

जाते-जाते राजा भोज, मंत्रियों से कह गए।

चाँद से चरित्र वाले, नेता सब चले गये,

नेताओं के नाम पर, ये कलंक रह गए। 110

कवि हुल्लड़ मुरादाबादीने भारतीय समाज में बढ़ती हुई विकृतियों पर हास्य व्यंग्य काव्य के उदाहरण दिये हैं। आज की युवा पीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता की ओर अधिक आकर्षित हो गयी है।

आठ बजे के बाद ही उठते हैं विस्तरों से

उठते ही कहते हैं चाय तो पिलाइये। 111

आज के समाज में भ्रष्टाचार की सीमा बढ़ती जा रही है। समाज में राजनैतिक क्षेत्र में भ्रष्टाचार की सबसे ज्यादा अधिकता पायी जाती है। राजनैतिक क्षेत्र में अनेक घोटाले होते है इस पर हुल्लड़ मुरादाबादी ने हास्य-व्यंग्य के द्वारा कुछ पंक्तियाँ लिखी है -

आजादी हमको मिली, हुए पचासों साल,
इसको पाने के लिए, मिटे जो लाखों लाल।
शीश ना उन्हें नवाया,
डूबके मर जा भाया।
नेता ने अधिकारियों को भेजा संदेश
फिफ्टी-फिफ्टी खाइये, वर्षगांठ पर देश
देश के ठेकेदारो
पेट पे लात न मारे॥ 112

हास्य कवि अल्हड़ ''बीकानेरी'' ने हास्य साहित्य पर सभी क्षेत्रों में कविताएँ लिखी है। राजनैतिक क्षेत्र में नेताओं के बदलते हुए चरित्र पर कवि अल्हड़ ने हास्य कविता लिखी है-

तुम्ही हो भाषण, तुम्ही होताली,
दया करो हे दयालु नेता।
तुम्हीं हो बैगन, तुम्हीं हो थाली,
दया करो हे दयालु नेता। 113

इन हास्य कविताओं में व्यंग्य गौण रूप से पाया तो गया है लेकिन हास्य की प्रधानता है।

व्यंग्य काव्य :-

व्यंग्य काव्य को पहले ही परिभाषित किया जा चुका है, व्यंग्यकारो में गद्य लेखक भी है और पद्य लिखकर गद्य करने में हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, लतीफ घोघी, गोपाल चतुर्वेदी।

और व्यंग्य कवियों में - अशोक चक्रधर, कैलाश गौतम, सुरेश उपाध्याय, शैल चतुर्वेदी आदि है। इन व्यंग्य कवियों ने अपनी व्यंग्य काव्य प्रतिभा के द्वारा समाज की विद्रूपताओं, विसंगतियों, भ्रष्टाचार को दूर करने का प्रयास किया है इनके व्यंग्य

उदाहरण -अशोक चक्रधर का हास्य और व्यंग्य साहित्य में विशेष योगदान रहा है। इनके व्यंग्य के बहुत उदाहरण मिलते है। जो समाज की कुरीतियो को उजागर करते हैं। समाज की न्याय व्यवस्था पर इनकी व्यंग्य पंक्तियाँ दृष्टव्य की गई है -

उदाहरण-1

आँखो में चमक
और मुस्कारते होंठ
काला चश्मा, काला कोट,
कैमरे के सामने बड़ी अदा के साथ
वकील साहब ने फोटो खिचवाया
अगले दिन सबको दिखाया,
सबने कहा-
वाह, क्या चित्र है,
हमने कहा झूठा है,
फरेब है।
वकील साहब तैश खा गए,
हमने कहा-
क्रोध मत कीजिए
ध्यान दीजिए
यह चित्र
वकालत की मर्यादा डुबोता है।
क्योंकि वकील का हाथ
अपनी जेब में नहीं
दूसरों की जेबों में होता है। 114

अशोक चक्रधार ने व्यंग्य कविताओं से राजनीति की विद्रूपताओं का पर्दाफाश किया है। राजनीति के व्यंग्य उदाहरण इस प्रकार है-

राजनीति का
इंसनियत से
कोई वास्ता नहीं है।
राजनीति शुद्ध व्यवसाय है,

जिसकी एक निश्चित आय है,
इसमें जीतने वाले के
पौ-बारह रहते हैं,
चित और पट दोनो अपनी
इसे राजनीति कहते है।

हास्य-व्यंग्य साहित्य के कवि कैलाश गौतम ने समाज की बदलती हुई परिस्थितयों समाज के भ्रष्टाचार सरकारी तन्त्रों के अन्याय को देखकर व्यंग्य कविता द्वारा कुछ पंक्तियाँ दृष्टत्य की है-

भले डाँट घर में तू बीबी की खाना,
भले जैसे-तैसे गिरस्ती चलाना।
भले जाके जंगल में धूनी रमाना,
मगर मेरे बेटे। कचहरी न जाना।
कचहरी की महिमा, निराली है बेटे,
कचहरी वकीलों की थाली है बेटे।
पुलिस के लिए, छोटी साली है बेटे,
यहाँ पैरवी अब दलाली है बेटे।
कचहरी यह गुंडो की खेती है बेटे,
यही जिदंगी उनको देती है बेटे।
खुलेआम कातिल यहाँ घूमते हैं
सिपाही-दरोगा कदम चूमते हैं। 116

कवि सुरेश आचार्य का हिन्दी व्यंग्य साहित्य में विशेष योगदान रहा है। भारतीय समाज के भ्रष्टाचार चारों तरफ बेरोजगारी की समस्या भारत देश अनेक समस्याओं से ग्रस्त है जिसे देखकर कवि ने व्यंग्य पंक्तियाँ दृष्टव्य की है। जैसे-

आज मेरा मन बड़ा उदास है
मेरा भी एक बेटा था, वह गुम हो गया है।
वह केवल एक भाई अपनी बहिन का है
वह हमेशा बैल बोटम पैन्ट पहनता है
पुस्तकें पढ़ने का उसे चाव नहीं है
रामायण गीता से उसे लगाव नहीं है।

सूर या तुलसी के पदों को सुनकर
वह कभी खिल नहीं सकता
मेरा बेटा किसी स्कूल के पास मिल नहीं सकता।
मेरा बेटा जहाँ कहीं भी होगा
वहाँ जवान लड़कियाँ तो जरूर होगी
तब तो मेरा बेटा उन पर मर मिटा होगा
वह अपनी बदमाशियों और हरकतों के कारण
वह हर गली चौरस्ते पर
चप्पलों से पिटा होगा।
भगवान किसी के बाप को न दिखलाए ऐसी बेकली
मैंने उसकी पहचान आप लोगों को बता दी
लेकिन आपने शायद मुझे नहीं पहचाना
मत कहों कि मै कोई आदमी विशेष हूँ-
मेरे दोस्तो !
मैं एक बदनसीब देश हूँ
जिसका नाम हिन्दुस्तान है
जो अपने ऐसे बेटे के कारण बदनाम है
जिनका कोई ध्येय नहीं है
उद्देश्य नहीं है। 117

कवि शैल-चुतर्वेदी ने हास्य-व्यंग्य साहित्य के क्षेत्र में एक बहुमुखी प्रतिभा दिखायी है। इनकी काव्य प्रतिभा सर्वव्याप्त है। इन्होंने व्यंग्य के द्वारा राजनीति में होने वाले भ्रष्टाचार को उजागर किया है-

व्यंग्य उस नेता को सुनाओ,
जो जन-सेवा के नाम पर ऐश करता रहा
और हमें बेरोजगारी का रोजगार देकर
कुर्सी को कैश करता रहा
व्यंग्य उस अफसर को सुनाओ
जो हिन्दी के प्रचार की डफली बजाता रहा

और अपनी औलाद को अंग्रेजी का पाठ पढ़ाता रहा।

व्यंग्य उस सिपाही को सुनाओ

जो भ्रष्टाचार को अपना अधिकार मानता रहा

और झूठी गवाही को पुलिस का संस्कार मानता रहा। 118

इन कविताओं में व्यंग्य की प्रधानता अधिक है। हास्य अत्यधिक सूक्ष्म अवस्था में पाया गया है।

*

अध्याय -1

संदर्भग्रन्थ-सूचि

1. हिन्दी साहित्य में हास्य रस, बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ.-1
2. हिन्दी साहित्य में हास्य रस, बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ -6
3. हिन्दी साहित्य में हास्य रस, बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ.-6
4. हिन्दी साहित्य में हास्य रस, बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ.-7
5. हिन्दी साहित्य में हास्य रस, बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ.-7
6. हिन्दी साहित्य में हास्य रस, बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ.-15
7. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ.-15
8. मैथलीशरण गुप्त प्रहनद। पृ. 11
9. मैथलीशरण गुप्त प्रहनद। पृ. 13
10. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ. 13
11. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ. 14
12. हिन्दी और गुजराती कहानियों में हास्य और व्यंग्य का तुलनात्मक अनुशीलन - डॉ. भगवानदास नारायण कहार। पृ. 14
13. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा - डॉ. मिथिलेश महेश्वरी। पृ. 28
14. काका हाथरसी एक समीक्षा यात्रा - डॉ. मिथिलेश महेश्वरी। पृ. 28
15. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ. 14
16. हिन्दी साहित्य में हास्य रस - डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ. 12
17. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ. 10
18. हिन्दी और गुजराती कहानियों में हास्य और व्यंग्य का तुलनात्मक अनुशीलन - डॉ. भगवानदास नारायण कहार। पृ 70-71
19. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ. 10
20. महाभोज ''राजनैतिक विडम्बनाये और महाभोज'' लेख दूर्वादल (साहित्यिक त्रैमासिक) अंक-5 मई-जुलाई 1983। पृ. 165
21. विश्वनाथ सत्य व्रत सिंह । पृ. 75
22. हिन्दी साहित्य कोश भाग-3, रामखिलावन पाण्डे । पृ. 74
23. हिन्दी व्यंग्य साहित्य में नारी। पृ. 9
24. हिन्दी व्यंग्य साहित्य में नारी, डॉ. शैलजा महेश्वरी। पृ. 10
25. हिन्दी साहित्य में हास्य रस, डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी। पृ. 19
26. एल. जे. पाट्स कामदी। पृ. 153
27. ''स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता'' में व्यंग्य, डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 24
28. ''स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता'' में व्यंग्य, डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 25
29. हिन्दी व्यंग्य साहित्य में नारी डॉ. शैलजा महेश्वरी। पृ. 10
30. हिन्दी व्यंग्य साहित्य में नारी डॉ. शैलजा महेश्वरी। पृ. 11
31. हिन्दी के प्रमुख व्यंग्यकार- डॉ. स्मिता चिपलुणकर। पृ. 3
32. हिन्दी साहित्य में हास्य रस, डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी। पृ. 42
33. वीभत्स रस और हिन्दी साहित्य, डॉ. कृष्णदेव झारी। पृ. 131
34. हिन्दी साहित्य में विविधवाद, डॉ. प्रेम नारायण शुक्ल। पृ. 377
35. हिन्दी और गुजराती कहानियों में हास्य और व्यंग्य का तुलनात्मक अनुशीलन - डॉ. भगवानदास नारायण कहार। पृ. 48
36. आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यंग्य, डॉ. विरेन्द्र मेहदीस्तॉ। पृ. 23
37. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य का मूल्यांकन, डॉ. सुरेश महेश्वरी। पृ. 35

38. हिन्दी नाटकों में हास्य तत्त्व, डॉ. शातांरानी। पृ. 73
39. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य का मूल्यांकन, डॉ. सुरेश महेश्वरी। पृ. 31
40. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य का मूल्यांकन, डॉ. सुरेश महेश्वरी। पृ. 31
41. Oxfored English Dictonary Vol -9. P. 9.
42. हिन्दी व्यंग्य साहित्य में नारी, डॉ. शैलजा महेश्वरी। पृ. 11
43. Eneyclopedia Britannica Vol 20. P. 5
44. Mericlith, Idea of comedy (London -1943) P. 79.
45. जोन एम. बुलिट, जोनाथन स्विकट एन्ड दिएनाटोमी ऑफ स्टायर (लन्दन, 1961) पृ. 39
46. एल .जे. पाट्स, ''कामदी''। पृ. 153
47. Swilt, The battleoy the books, (1704) P. 6
48. व्यंग्य विविधा में व्यंग्य, डॉ. कमलेश शर्मा। पृ. 1
49. व्यंग्य का समाज दर्शन, डॉ. सुरेश आचार्य। पृ. 39
50. व्यंग्य का सौन्दर्य शास्त्र, मलय - पृ. 13
51. An Erray on Commedy, Meriidth P. 84
52. शारदातनयः भाव प्रकाश। पृ. 47
53. हिन्दी साहित्य में हास्य रस बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ. 42
54. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबंधसाहित्य में व्यंग्य- डॉ. ऊषा शर्मा। पृ. 26
55. हिन्दी साहित्य में हास्य रस डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ. 15
56. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य- डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 29
57. व्यंग्य क्या व्यंग्य क्यों , डॉ. श्याम सुन्दर घोष, श्री रामनारायण उपाध्याय का लेख। पृ 66
58. हिन्दी का स्वातन्त्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य, डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी। पृ. 58, 59, 60
59. धी ऑक्सफोर्ड इन्गिलिश डिक्शनरी, वॉल्यूम-बी। पृ. 660
60. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य- डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 30
61. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य- डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 30
62. हिन्दी और गुजराती कहानियों में हास्य और व्यंग्य का तुलनात्मक अनुशीलन। पृ. 50
63. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य- डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 30
64. हिन्दी और गुजराती कहानियों में हास्य और व्यंग्य का तुलनात्मक अनुशीलन। पृ. 49
65. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य- डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 30
66. हिन्दी और गुजराती कहानियों में हास्य और व्यंग्य का तुलनात्मक अनुशीलन - डॉ. भगवानदास नारायण कहार। पृ. 50
67. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य- डॉ शेरजंग गर्ग। पृ. 31
68. हिन्दी साहित्य में हास्य रस डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ. 15
69. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य- डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 31
70. हास्य के सिद्धान्त तथा मानस में हास्य प्रो. जगदीश पाण्डे. पृ.
71. हिन्दी साहित्य में हास्य रस डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ. 23
72. हिन्दी साहित्य में हास्य रस डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ. 25
73. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य- डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 34
74. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य- डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 33
75. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य- डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 34
76. हिन्दी साहित्य में हास्य रस डॉ. बरसाने लाल चतुवेदी। पृ 26
77. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 37
78. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य- डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 89
79. मेरी श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य रचनायें (भूमिका) डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी। पृ. 12
80. आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यंग्य डॉ. वीरेन्द्र मेंहदस्ता पृ. 15-16.

81. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गद्य में व्यंग्य डॉ. सुरेश महेश्वरी पृ. 36.
82. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य का मूल्यांकन, डॉ. सुरेश महेश्वरी। पृ 36
83. हिन्दी के व्यंग्य निबन्ध, डॉ. आनंद गौतम पृ। 15.
84. पगदंडियों का जमाना हरिशंकर परसाई, पृ। 91.
85. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, डॉ. शेरजंग गर्ग पृ 83.
86. परसाई रचनावली खण्ड-1, चूहा और मैं, हरिशंकर परसाई। पृ. 16
87. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी गद्य में व्यंग्य हरिशंकर परसाई। पृ. 24
88. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य का मूल्यांकन डॉ. सुरेश महेश्वरी। पृ. 39
89. व्यंग्य क्या व्यंग्य क्यो डॉ. श्याम सुन्दर घोष। पृ. 3.
90. गुडमैन, बयूर्सेस आफ लिटररी एसेज। पृ. 72.
91. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 88
92. हम्बर्ट बोल्फ, नोटस् ओन कर्स सटायर (आक्सफोर्ड) लंडन 1954। पृ. 111
93. आधुनिक हिन्दी साहित्य में व्यंग्य डॉ. विरेन्द्र मेंहदस्यि। पृ. 3
94. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी निबंध में व्यंग्य, डॉ. ऊषा शर्मा। पृ. 26
95. हिन्दी का स्वातंत्रयोत्तर हास्य और व्यंग्य, डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी। पृ. 69
96. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 68
97. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 69
98. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 69
99. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 61
100. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 62
101. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में व्यंग्य, डॉ. शेरजंग गर्ग। पृ. 86
102. आधुनिक हिन्दी काव्य में व्यंग्य, डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी। पृ. 23
103. हिन्दी का स्वातंत्र्योत्तर हास्य और व्यंग्य, डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी। पृ. 73
104. हिन्दी साहित्य में व्यंग्य
105. हिन्दी और गुजराती कहानियों में हास्य और व्यंग्य का तुलनात्मक अनुशीलन- डॉ. भगवानदास कहार। पृ. 63
106. जय बोलो बेईमान की, काका हाथरसी। पृ. 33
107. काका की तरंग, काका हाथरसी। पृ. 88
108. लूटनीति मंथन करी, काका हाथरसी। पृ. 84
109. काका की फुलझडियाँ, काका हाथरसी पृ. 128
110. व्यंग्यमेव जयते, ओम प्रकाश आदित्य पृ. 48
111. अच्छा है पर कभी-कभी हुल्लड मुरादाबादी पृ. 12
112. अच्छा है पर कभी-कभी हुल्लड़ मुरादाबादी पृ. 12
113. अब तो आँसू पोछ अल्लड बीकानेरी। पृ. 13-14
114. व्यंग्यमेव जयते, योगेन्द्र मौद्गिल. पृ. 25-26
115. भोले-भोले, अशोक चक्रधर। पृ. 135
116. हास्य-विनोद काव्य कोश. पं. गोपाल प्रसाद व्यास। पृ. 192
117. श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ काका हाथरसी गिरिराज शरण अग्रवाल। पृ. 179,180-181
118. श्रेष्ठ हास्य-व्यंग्य कविताएँ काका हाथरसी गिरिराज शरण अग्रवाल। पृ.134